वेदों की मौखिक परंपरा
(विश्व की अमूर्त विरासत)

निर्देशक : आर. भारथाद्री
लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी
अवधि : 2 घंटे 33 मिनट

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला संघ (इ.गाँ.रा.क.के.) की ओर से निर्मित एवं भारत सरकार के कला मंत्रालय द्वारा प्रोत्साहित

वैदिक गीत (ऋचाएं) विश्व की सबसे पुरानी मौखिक परंपरा है जो काफी लोकप्रिय हैं। वैदिक गीत विशाल संस्कृत साहित्य से लिये गये हैं, जिनका संकलन 5000 से 1500 सालों पहले हुआ। वैदिक मंत्रोच्चार की परंपरा गुरु और शिष्य के जमाने की परंपरा है जो श्रुति और स्मृति के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होती आयी है। इ.गाँ.रा.क.के. ने इस फिल्म को यूनेस्को (UNESCO) के लिए भारत सरकार के कला मंत्रालय की ओर से बनाया है जो कि वेदों की मौखिक परंपरा पर आधारित है। बाद में यूनेस्को ने वैदिक मंत्रोच्चार को मानवता के लिए सर्वोत्तम मौखिक और अमूर्त विरासत भी माना।

ये फिल्म जैमिनीय शाखा, सामवेद की रानायाणीय शाखा और अथर्व वेद की सौनका एंव पिप्पलाद का उल्लेख करती है। केरल के त्रिचूर, कर्नाटक के गोकर्ण एवं होन्नावर, तमिलनाडु के त्रिची, महाराष्ट्र के शोलापुर और उड़ीसा के पुरी एवं बालेश्वर इसका अनुसरण होता है। फिल्म वैदिक संग्रहों को लय में गाने की अनूठी कार्यप्रणाली का अनावरण करती है जिसका उद्देश्य शब्दों में बिना किसी छेड़ छाड़ के वेदपठिनों द्वारा इन संग्रहों का प्रचार-प्रसार करना है। ये जटापथ और घनापथ शब्दों के पुनरावृत्तीय उच्चारण पर प्रकाश डालती है, जिसे आगे, पीछे और वृत्तीय ढंग से ध्वनि रूप में स्मरक के साथ गाया जाता है। हमारा कैमरा प्रायद्वीपीय भारत के कई गुरुकुलों के दृश्यों को कैद करता है जहां पर ढेर सारी परंपराएं एक ही समय में लेकिन अलग-अलग रूप में आज भी विद्यमान हैं।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 01

****

रामलीला

(रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन)
भाग प्रथम और द्वितीय

निर्देशक : आर. भारथाद्री
लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी
अवधि : 1 घंटा 57 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

रामायण भारत का सबसे पुराना ग्रंथ है, जिसमें 24,000 काव्यात्मक छंदों का समावेश है जो भारतीय अध्यात्मिक परंपराओं के लिए मील के पत्थर साबित हुए। संस्कृति और जीवन को चलाने वाले संस्कारों के संयोजन के रुप में रामलीला भगवान राम के कर्मों को समर्पित है जिन्होनें भक्तिमय पूजा के उद्देश्य को पूरा किया। भगवान राम ने त्याग, सौहार्द, ध्यान और परस्पर भाईचारा के लिए आदर्श स्थापित किया। उत्तरी भारत की रामलीला हिंदी भाषा में संकलित रामचरित मानस पर आधारित है जिसे तुलसीदास ने लिखा था। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला संघ ने इस डाक्यूमेंटरी (वृत्तचित्र) को भारत सरकार के कला मंत्रालय के लिए बनवाया है और इसे यूनेस्को को प्रस्तुत किया जाएगा। इस दस्तावेज में रामलीला के माध्यम से मानवता की मौखिक और अमूर्त विरासत का उत्कृष्ट उदाहरण दर्शाया गया है। यह फिल्म रामनगर (वाराणसी) की रामलीला पर आधारित है साथ ही अवध, ब्रज और मधुबनी की परंपराओं पर भी प्रकाश डालती है।

रामलीला उत्सव के दौरान पूरा रामनगर कस्बा एक तपोभूमि में बदल जाती है जो करीब 20,000 लोगों के लिए एक मंच बन जाता है। यहां पर लोग नाट्य कलाकारों के साथ मिल कर जत्थे में एक साथ पुण्य नाटक देखने जाते है जो कि 31 दिनों तक चलता है। रामलीला के पहले दिन रामनगर के राजा हाथी पर सवार होकर नाटक का शुभारंभ करने के लिए आते है। भगवान राम का बालस्वरूप किसी बुजुर्ग के कंधे पर आता है। दर्शक अपने साथ रामचरितमानस की प्रतियां लेकर आते हैं और जब रामलीला के पात्र अपने संवाद बोलना शुरू करते हैं तो लोग साथ-साथ रामचरित मानस से दोहों और चौपाइयों को दोहराते हैं।

यह फिल्म अयोध्या के रामलीला की पौराणिक और भाषा संबंधी बारीकियों का अन्वेषण करती है जिसमें ब्रज, मधुबनी क्षेत्र और अवध की बोलियों का मिश्रण है। यह भारत की अमूर्त विरासत को नाटक के माध्यम से मौखिक रुप में प्रस्तुत करती है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 02

****

<u>नवकलेवरा – नया अवतार</u>

निर्देशक : पृथ्वीराज मिश्रा
अवधि : 49 मिनट 10 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

उड़ीसा के पुरी में जगन्नाथ मंदिर में भगवान जगन्नाथ और उनके साथियों की मूर्तियों को नीम की लकड़ी से बनाया जाता है। रीति-रिवाज के मुताबिक इन मूर्तियों को 12/19 सालों के अंतराल पर बनाया जाता है। इस उत्सव को नवकालेवारा या नया अवतार कहा जाता है। इस फिल्म में 29 मार्च 1996 को ज्येष्ठ पूर्णिमा के 65वें दिन से पहले के उत्सव वाले दिन को दर्शाया गया है। इसे हम सनन पूर्णिमा भी कहते हैं।

ये प्राचीन उत्सव बनजगा यात्रा के इर्द-गिर्द घूमता है जो मूर्तियां बनाने के लिये पवित्र लकड़ी की तलाश में की जाती है। मंदिर के इस काम के लिये पौराणिक मूल के दयित या दैत जनजातीय लोग अधिकृत होते है जिन्हे विसावासु जनजातियों का उत्तराधिकारी माना जाता है।

अग्या माला के मिलने के बाद, देयिता लोग अपनी टोपियों को पहन कर निकल जाते हैं जिन पर गीता गोविंद के दोहे मुद्रित होते हैं। सही प्रकार की नीम की लकडियों की तलाश से पहले आशीर्वाद लेने के लिये रथ मांगल्य गुफा की और बढ़ता है। नीम का पेड़ 15 फीट ऊँचा होना चाहिए जिसमें पक्षियों के घोंसले (कोटर) न बने हो और उनमें सांप न रहते हों। काटने से पहले 2 दिन तक पेड़ की पूजा की जाती है। लट्ठों को ठेले पर लादकर वापिस भगवान जगन्नाथ के मंदिर लाया जाता है। प्रसिद्ध रथ यात्रा के 15 दिन पहले इन लकड़ियों से भगवान जगन्नाथ जी और उनके साथियों की पावन मूर्तियां बनाई जाती है। प्रकृति का संतुलन बनाये रखने के लिए जिस जगह से पेड़ काटा जाता है उस जगह पर नीम के पौधे का रोपण किया जाता है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 03

****

<u>गोतिपुआ</u>

इ.गाँ.रा.क.के. की अमूर्त विरासत श्रृखंला

निर्देशक : गुलबहार सिंह
अवधि : 31 मिनट 58 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

भारत में नृत्य की परंपरा जीवन शैली, उत्सव और पुण्य आराधना का प्रासंगिक मिश्रण रही है। सांस्कृतिक, सातत्य और एकीकरण परंपराओं का आधार रहा है। पुरुष गोतिपुआ नर्तक और देवदासियां भगवान को समर्पित होती हैं और इन्होंने ही ओडिसी को आकार दिया। यह नृत्य अब मंदिरों से सार्वजनिक जगहों तक जा पहुंचा है। गोत्तिपुआ एक सीमित दायरे में ही सिमट कर रह गए हैं। यह फिल्म नृत्य से पहले के सख्त प्रशिक्षण के दौरान युवा नर्तकों की शारीरिक और मानसिक तैयारियों को समर्पित है। यह फिल्म भारत की महानतम अमूर्त विरासत को श्रद्धाजंलि है जिसका संबंध गोतिपुआ लोगों के भारत की नृत्य कला परंपराओं में योगदान से है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 04

****

केरल के भित्ति चित्र

निर्देशक : आर. सारथ
अवधि : 30 मिनट 28 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

यह फिल्म केरल के मदिरों के कलात्मक भित्तिचित्र से जुड़े नृत्यों की घटती परंपरा और विरासत पर प्रकाश डालती है। यह कलाकारों की धार्मिक आस्था को दर्शाती है जो पावन म्युरल का निर्माण करते है जिसे धूलि चित्र कहा जाता है। इनको बनाने के लिए केवल पाँच प्राकृतिक रंगों जैसे श्वेत, श्याम, पीले, लाल और हरे रंगों का इस्तेमाल किया जाता है। ये चित्र रंगों के माध्यम से कई पौराणिक कहानियों को दर्शाते हैं। ये दोभुजीय और तीन भुजीय रंगी और गढ़ी हुई वास्तुशिल्पीय सतहों के सम्मिलन को दर्शाते है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 05

****

थांग-ता
मणिपुर की मार्शल आर्ट
(इ.गाँ.रा.क.के. की अमूर्त विरासत श्रृखंला)

निर्देशक : अरिबम श्याम शर्मा
अवधि : 25 मिनट 24 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

मणिपुरी मार्शल आर्ट (सामरिक कला) को थांग ता (तलवार और बरछी) कहा जाता है। यह कला लड़ाई के गुर और पूजा को समर्पित होती है। थांग ता का मेत्तई सृजन प्राचीन काल में हुआ। कहा जाता है कि अशिबा के पिता अतंगकोक शिताबा ने उन्हें अपना खुद का संसार बनाने को कहा। सृजन के लिये जिन स्वरूपों का चयन किया गया उनमें से एक को थेंगाऊ कहा जाता है जिसका वर्णन थांग ता में किया जाता है। आजकल यह कला एकाकीपन से जूझ रही है। इस फिल्म ने थांग ता कला के कुछ अंशों का पता लगाया है जो मार्शल आर्ट और अध्यात्म के मिश्रण के विपरीत मणिपुरी लोगों की मानसिकता में जीवित है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 06

****

वांग्ला - (एक गारो महोत्सव)
(इ.गाँ.रा.क.के. की अमूर्त विरासत श्रृखंला)

निर्देशक : बप्पा रे
अवधि : 30 मिनट 46 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

पश्चिमी मेघालय में गारों समुदाय के वंशज तिब्बत गये थे। गारो की पहाड़ियां असम और बांग्लादेश की सीमाओं के मध्य फैले समतल क्षेत्र से जुड़ी है। गारो समुदाय के लोग भगवान सूर्य को अपना इष्टदेव मानते हॉ। सूर्य देव को गारो अपने झूम का शासक मानते हैं जो उनकी खेती बाड़ी की रस्मों और जीवन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है। गारो समुदाय का वांग्ला पर्व भगवान सूर्य को समर्पित होता है जिसका उद्देश्य उदारता और जन कल्याण की खुशियों को मनाना है। यह वक्त उल्लास मनाने का होता है, दूल्हा और दुल्हन चुनने का होता है और युवा लोगों के लिये दोस्ती बढ़ाने का खुशनुमा मौका होता है। यह फिल्म गारो समुदाय के दर्शनशास्त्र, मान्यताओं और उसूलों की पृष्ठभूमि में लोगों के जीवन और वक्त के बारे में खुद के नजरिये से बताती है और यह उनकी सोच का आईना है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 07

****

लाई हरोबा

इ.गाँ.रा.क.के. की अमूर्त विरासत श्रृखंला

निर्देशक : अरिबम श्याम शर्मा
अवधि : 27 मिनट 51 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

लाई हरोबा को लाई हाओ लोबा शब्द से लिया गया है। इस अवधारणा का मुख्य अर्थ लोगों पर देवता की पूर्ण कृपा से है। यह मणिपुर का वार्षिक उत्सव है जो अप्रैल या मई महीने में लगातार 7,9 या फिर 13 दिनों तक मनाया जाता है। यह फिल्म प्रकृति के सृजन की गवाही के रूप में पारंपरिक नृत्य, नाटक और प्रसंगों द्वारा जीवन की कई अवस्थाओं को दर्शाती हैं जिसमें पेड़ पौधे भी शामिल हैं। अंडे के पीले और सफेद भाग की तुलना नर और मादा के सिद्धांत के साथ की जाती है। पवित्र जल भगवान गुरु सिदावा के नाविक को स्पर्श करता है। अतिया गुरु सिदावा की मदद से मनुष्यों पर उपकार हेतु खूबसूरत बिजली की देवी की मदद से दानव हारवा को हराते हैं।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 08

****

महाकुंभ: "अमृत की खोज में"
(इ.गाँ.रा.क.के. की अमूर्त विरासत श्रृखंला)

निर्देशक : बप्पा रे
अवधि : 48 मिनट 1 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

प्रयाग – आधुनिक इलाहाबाद जिसे तीर्थराज भी कहा जाता है, पवित्र नदियों का संगम है और जिसके किनारे पर तीन लाख दस हजार के करीब तीर्थ स्थान है। महाकुंभ जो 12 सालों में एक बार होता है इस फिल्म का विषय है। ये फिल्म 2001 के महाकुंभ का वर्णन करता है जब लाखों लोग पावन नदी में पुण्य कमाने की कामना में डुबकी लगाते है। यह आंतरिक अग्निहोत्र के स्थान की मौखिकता का वर्णन करता है जिसमें लोग शरीर और मन से कुछ धार्मिक कार्य करते है जिसका उद्देश्य क्रमिक विश्व और खुद से रिश्ता बनाये रखना है। इस तपस्या का उद्देश्य अपने अंदर के जहरीले सोम को जला कर ऊर्जा का अमृत स्त्रोत बनाना ह। विश्व में सौर ऊर्जा को उकसाने के अलावा इस प्रक्रिया को पानी के चक्रीय वृत्त के साथ जोड़ा जाता है। माना जाता है कि महाकुंभ में नहा कर श्रद्धालु अपने पापों से मुक्ति की कामना करते हैं।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 09

****

राजा दीन दयाल

निर्देशक : जय चंदीराम
अवधि : 20 मिनट 31 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

यह फिल्म राजा दीनदयाल के जीवन और उपलब्धियों पर प्रकाश डालती है जिन्होंने अपने कुशलता से फोटोग्राफी की दुनिया में क्रांति लायी थी। दीनदयाल 20 साल की उम्र में ही एक योग्य अभियंता बन गये थे। वह लोकनिर्माण विभाग में मुख्य अनुमानक और ड्राफ्टमैन थे। उसके बाद उन्होने कैमरे से नाता जोड़ा। उन्हें राजा की उपाधि हैदराबाद के निजामों ने दी थी और रानी विक्टोरिया से शाही नियुक्ति अधिकार पत्र मिला था। सन 1875 में ब्रिटिश एजेंट ने राजा दीनदयाल को वेल्स के राजकुमार (प्रिंस) के भारत आगमन का भव्य समारोह कवर करने के लिये नियुक्त किया। उन्होंने फोटोग्राफी में बड़े चित्र, डालमेयर लेंस, ड्राई प्लेट्स, पी ओ पी (POP) पेपर का इस्तेमाल किया। इसके बाद सिकंदराबाद में दीनदयाल ने खास तौर पर महिलाओं के लिए अपना बड़ा फोटो स्टूडियो खोला। इस फर्म में 50 लोग काम करते थे जिसमें कुछ जर्मन ऑपरेटर भी थे। उन्होने पूरे देश का दौरा बैलगाड़ी और रेल में किया। उन्होंने देश की पुरातत्विक इमारतों, वास्तुशिल्पीय विरासतों, महलों, खूबसूरत जगहों और मंदिरों के फोटो खींचे और मध्य भारत में ब्रिटिश एजेंट सर लेपेल ग्रिफिन के लिये वास्तुशिल्पीय फोटोग्राफर भी रहे।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 10

****

बीजापुर की पुनरावृत्ति

निर्देशक : आर. भारथाद्री
लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी
अवधि : 52 मिनट 40 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

बीजापुर की जमीन 16 से 17वीं शताब्दी में आदिल शाही के भव्य वास्तुशिल्प के लिये जानी जाती है। आदिल शाह को सांस्कृतिक संश्लेषण के लिये प्यार से जगत गुरु पदशाह के नाम से जाना जाता है। यह फिल्म उनके द्वारा बनाये गये धर्मनिरपेक्ष, रक्षा और धार्मिक वास्तुशिल्पीय इमारतों को दर्शाती है। इसके अलावा 1892 में स्थापित भारत के पुरातत्विक विभाग के संग्रहालय में रखी डेक्कन पेंटिंग्स का निरीक्षण करती है। यह प्रतिध्वनि वाले गोलगुंबज और व्हिस्पर गैलरी (चित्रशाला) की तस्वीरें दिखाती है और बताती है कि कैसे 45 डिग्री के कोण पर ये ध्वनियां 10 सतहों तक इस भवन में परावर्तित होती हैं।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 11

****

हेमिस

(इ.गाँ.रा.क.के. की अमूर्त विरासत श्रृखंला)

निर्देशक : एम. के. रैना

अवधि : 33 मिनट 15 सेकंड

इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

17वी शताब्दी में राजा सेन्ग्या नामग्याल ने हेमिस गोम्पा का निर्माण किया था जो द्रुक्पा वंश का मुख्यालय था। लद्दाख में हैमिस गोम्पा का वार्षिक समारोह ग्यालसे रिनपोचे ने शुरू किया जिसमें बौद्ध धर्म के कई मान्यताओं और परंपराओं का वहन किया जाता है। गुरु पद्मसंभव ने चमत्कारिक ढंग से कमल पर जन्म लिया था। हैमिस उत्सव तिब्बती पंचांग के अनुसार पांचवे महीने 10वें और 11वें दिन मनाया जाता है जिसमें तिब्बती लोग मुखौटा पहनकर गुरुजी की बुराइयों के खिलाफ जीत के प्रसंग को नृत्य और संगीत के माध्यम से लोगों को सुनाते है। यह उत्सव धर्म और खुशहाली को समर्पित है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.

परिग्रहण सं. 12

****

हम्पी
(विश्व विरासत स्थल)
भाग प्रथम से षष्ठ

निर्देशक : आर. भारथाद्री
लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी
अवधि : प्रकरण (एपिसोड) प्रथम से षष्ठ : 2 घंटे 27 मिनट 19 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

यह फिल्म विश्व धरोहर हम्पी की भव्यता को दर्शाती है। हम्पी को प्राचीन काल में पंपकखेत्र कहा जाता था। हम्पी 14वी और 16वी सदी में विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी जो कर्नाटक की तुंगभद्रा नदी के दक्षिण किनारे बसा है। कैमरा आदिकालीन पत्थरों से बने स्मारक, देहात का दृश्य, किलाबन्दी, नहर, विराट गोपुरा, विशालकाय शिल्प, क्वीन्स बाथ और चंद्रशेखर मंदिर, विरुपक्ष मंदिर, लक्ष्मी नरसिंह या कृष्ण मंदिर, हजारा राम मंदिर, विठ्ठल और तिरुवेन्गलनाथ मंदिर के दृश्य दिखाता है। यह फिल्म मौखिक प्रसंग की परंपरा, समुद्र के भित्तीय प्रदेश की संस्कृति की छवि , विद्वानों की टिप्पणी और संगीत स्तंभों से उत्पन्न संगीत को दिखाता है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 13
****

पंजाब के मिरासी
गाने के लिए जन्मे
भाग प्रथम और द्वितीय

निर्देशक : शिखा झींगन
अवधि : 49 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

यह फिल्म पंजाब के विभाजन से पहले के अनूठी मिरासी परंपरा को भी कैमरे में कैद करती है जहां पर मुस्लिम औरतें जीवनचक्र उत्सवों में बेरोक-टोक भाग लेती थीं। धर्म की सीमाओं से निकल कर खुद की पहल से सामाजिक सांस्कृतिक स्तर पर भाग लेती थीं। यह फिल्म स्मृति में डूबकर उस इतिहास को याद करती है जब मिरासन मृत्यु पर बेटोक रोती थी, जन्म और विवाह जैसे खुशनुमा मौकों पर खुशियां मनाती थीं। सब धर्मों के लोगों के मध्य यह व्यवहार सेतु का काम करता था। आजकल मिरासन के बच्चे अपनी आजीविका के लिये घर-परिवार को छोड़कर सार्वजनिक जगहों पर संघर्ष कर रहे हैं।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 14

****

बादामी की बात करती मूर्तियां

निर्देशक : आर. भारथाद्री
लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी
अवधि : 51 मिनट 29 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

यह फिल्म कर्नाटक के बीजापुर जिले के बादामी गुफा के शानदार मूर्तियों को भी दिखाती है जिसे 16वी सदी में राजा मंगलेश ने पश्चिमी चालुक्य के अंदर बनाया था। 579 ईसा पूर्व इस धरोहर की सशक्त कारीगरी, अत्याधुत्करमविरासिटम के लिये शाही उपाधि मिली थी। उभयलिंगी शिव अर्धनारीश्वर, हरिहर, विष्णु त्रिविकर्मा, बौधिसत्व पद्मपाणि, विशालकाय स्तंभ कारीगरी का उत्कृष्ट उदाहरण पेश करते है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 15

****

आइहोल

भारतीय वास्तुकला का पालना

निर्देशक : आर. भारथाद्री
लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी
अवधि : 34 मिनट 12 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

आज का आइहोल गांव कर्नाटक के भागलकट जिले का एक पुराना और समृद्ध गांव है। इसका वास्तविक नाम अयावोला या आर्यपुर है। 6वीं से 8वीं सदी में यह चालुक्य राजवंश की राजधानी थी। सपाट छत वाले लैड खान मंदिर, सपाट छत वाले कोन्टागुडी मंदिर, शिव को समर्पित दुर्गा मंदिर, उत्तरी भारत की शैली में बने शिखर मंदिर हुचीमली गुड़ी और हुचापाया, पहाड़ी पर बने मेगुती जैन मंदिर ये सभी आईहोल की सांप्रदायिक परंपरा और सौंदर्यशास्त्र के संगम को दर्शाते हैं।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.

परिग्रहण सं. 16

****

श्रवणबेलागोला

भाग प्रथम से तृतीय

निर्देशक : आर. भारथाद्री

लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी

अवधि : प्रकरण (एपिसोड) प्रथमः 25 मिनट 55 सेकंड

प्रकरण (एपिसोड) द्वितीयः 26 मिनट

प्रकरण (एपिसोड) ।द्वितीयः 24 मिनट 40 सेकंड

इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

मैसूर से 50 मील पूर्वोत्तर में स्थित विंध्यगिरी और चंद्रगिरी पहाड़ियों से जुड़ता हुआ क्षेत्र श्रावण बेलागोला है जिसे जैन समुदाय का काशी भी कहा जाता है। यह क्षेत्र मंदिरों, जलाशयों, विपुल मूर्तियों से परिपूर्ण है जिनको 10 और 12वीं सदी में पत्थरों से तराशकर बनाया गया हॉ। यहाँ पर बाहुबली महाराज की 58.8 फुट बड़ी मूर्ति है जिन्हें बलिदान और परित्याग का प्रतीक माना जाता है। पत्थरों को तराशकर गोमतेश्वर का निर्माण किया गया है जो जैन समुदाय की अन्य आकाशवृत्तीय धरोहरों में से सबसे विशिष्ट स्थान रखती है। बाहुबली पहले तीर्थंकर के संत पुत्र थे। ये मूर्ति 10वीं सदी के पश्चिमी गंगा कार्य के नमूनों का उत्कृष्ट उदाहरण है। कैमरा चंद्रगिरी पहाड़ी के खूबसूरत दृश्य भी प्रदर्शित करता है जो संत और श्रद्धालुओं के लिये आंतरिक मोक्ष की जगह है। महान राजा चंद्रगुप्त मौर्य यहां अपने जैन गुरु भद्राबाहु के साथ अपने अंतिम दिनों में जैन समुदाय की सालेखाना परंपरा का निर्वहन करने और मोक्ष प्राप्ति के लिये यहां आये थे। इस फिल्म में पवित्र प्रकृत भाषा में लिखित लेख, जैन दर्शन शास्त्र की संपूर्ण समझ, सांकेतिक अर्थ और रीति रिवाजों का पता चलता है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.

परिग्रहण सं. 17

****

ऊर्मी - अस्तित्व के लिए लड़ाई
(इ.गाँ.रा.क.के. की अमूर्त विरासत श्रृखंला)

निर्देशक : माइकल विलियम्स
अवधि : 26 मिनट 5 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

यह फिल्म लुप्त धरोहर ऊर्मी (पुराने जमाने में केरला के मार्शल आर्ट कलारिपयाटु का दुर्लभ शस्त्र) पर प्रकाश डालती है। इस शस्त्र में 12 लोचशील धार होती थी जो 12 फुट तक आराम से घूम सकती थीं। आज इस शस्त्र का नामों निशान मिट गया है। यह फिल्म इस शस्त्र की उत्पत्ति के बारे में जानकारी देती है और इसकी सांकेतिक भाषा और खतरनाक पूर्वसूचना को समझने का प्रयास करती है। मार्शल आर्ट का विवरण पौराणिक काल के धनुर्वेद की हस्तॉलिपियों में मिलता है। माना जाता है कि भगवान परशुराम जी भी मार्शल आर्ट में निपुण थे। उन्हें शस्त्र और शास्त्र का सम्यक ज्ञाता भी कहा जाता है। यह फिल्म मार्शल आर्ट में ऊर्मी शस्त्र की मौखिकता और कड़े प्रशिक्षण के बारे में बताती है जो गुरुओं की सख्त निगरानी में होता था। औरतें भी अपनी सुरक्षा के लिये मार्शल आर्ट का सहारा लेने में पीछे नहीं रहीं। यह फिल्म ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान नय्यर लोगों के संघर्ष के दिनों में ऊर्मी शस्त्र के प्रयोग के बारे में भी बताती है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 18

****

मुखौटे के पीछे
भाग प्रथम और द्वितीय

निर्देशक : संजीव भट्टाचार्य
अवधि : प्रकरण (एपिसोड) प्रथमः 28 मिनट 43 सेकंड
प्रकरण (एपिसोड) द्वितीयः 38 मिनट 32 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

फिल्म वैष्णव, बौद्ध मठों के बारे में और उनके समुदाय के मौखिक परंपराओं के पीछे छुपे संदेश को बताने का प्रयास करती है। इन मुखौटों के पीछे के स्वहित एंव परिहित, जीवन और मृत्यु, आदर्श काल और आदिकाल, व्यक्तिगत से लेकर सामूहिक उद्देश्यों को समझाने का प्रयास करती है। इसके अलावा पूर्वोत्तर भारत के लोगों के व्यक्तिगत पहचान के संदर्भ में सामाजिक, सांकेतिक, आध्यात्मिक और कलात्मक बदलावों को भी दर्शाती है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 19
****

डोकू-नाटक (ड्रामा)
(ताना भगत की विरासत)
भाग प्रथम और द्वितीय

निर्देशक : सौरभ किशोर
अवधि : प्रकरण (एपिसोड) प्रथम : 29 मिनट 53 सेकंड
प्रकरण (एपिसोड) द्वितीय : 34 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

ताना भगत (1888-1918) तक आधुनिक झारखंड राज्य के जनजातीय समुदाय छोटानागपुर का नेता था। एक समाज सुधारक के तौर पर उन्होंने लोगों को अंधविश्वास और शराबखोरी जैसी बुराईयों के प्रति सचेत किया और देश और दुनिया के साथ समुदाय के लोगों को अहिंसा और शांति के मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित किया। यह महात्मा गांधी के काल से काफी पहले की बात है। ताना पंडितों का मूल मंत्र भगवान की आराधना और शांतिमय जीवन है। ये लोग सादा जीवन, प्रकृति और वनों से प्यार और सात्विक भोजन को अपनाते हैं। सफेद झंडा इस समुदाय के लोगों का प्रतीक है। ब्रिटिश साम्राज्य से संघर्ष के दिनों में भी इन्होनें सत्य और अहिंसा का निर्वहन किया।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 20
****

सात सुर
(इ.गाँ.रा.क.के. की अमूर्त विरासत श्रृखंला)
भाग प्रथम और द्वितीय

निर्देशक : संजय खन्ना
अवधि : प्रकरण (एपिसोड) प्रथमः 31 मिनट 15 सेकंड
प्रकरण (एपिसोड) द्वितीयः 32 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

यह फिल्म पौराणिक और महानतम ध्वनि धरोहर नाद का वर्णन करती है। जिसे घराना परंपरा के राग और ताल की विविधता से जाना जाता है। इन घरानों में ग्वालियर का प्राचीन घराना और क्वाल बच्चा घराना शामिल है। ये फिल्म घरानों की मौखिकता और उनकी सेवाओं के विस्तृत विवरण का चित्रण करती है। 13वीं और 14 वीं सदी में अमीर खुसरो के खयाल को पारसी स्वर और हिंदू रागों के दुर्लभ संग्रह को प्रकाशित करती है। इस फिल्म में घरानों के नजरिये से महान संगीतकारों द्वारा खयाल को दी गई अपनी आजीवन सेवाओं के बारे में जानकारी दी गई है। इस फिल्म में भारत के विभिन्न संगीत विद्यालयों के स्वर के उच्चारण में विविधता जैसे तीखापन, मजबूती या फिर कहीं पर मिठास और गरिमा पर प्रकाश डालती है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 21
****

दिव्य राज्याभिषेक
(बाहुबली के महामस्तकाभिषेकम - करकाला)
भाग प्रथम और द्वितीय

निर्देशक : आर. भारथाद्री
लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी
अवधि : प्रकरण (एपिसोड) प्रथमः 22 मिनट 34 सेकंड
प्रकरण (एपिसोड) द्वितीयः 24 मिनट 36 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

यह फिल्म बाहुबली के महामस्तकाभिषेकम की रस्म का वर्णन करती है जो करकाला में 12 सालों के बाद होती है। इसकी शुरुआत जैन धरोहर बसादी के निर्माण से हुई। इस रस्म में बाहुबली की 42 फुट ऊंची मूर्ति को 10 दिनों तक स्नान करवाया जाता है। इस फिल्म में खीर अभिषेक, हवन की प्रक्रिया और उत्सव मूर्ति को बाहर लेकर जाने के दृश्य हैं। इसमें दिखाया गया है कि किस तरह से कलश पूजा के लिये कलशों को पवित्र धागे से बांधा जाता है और उत्सव के दसवें दिन 350 कच्चे नारियलों के पानी से बने विभिन्न रंग के पानी से बाहुबली के मुखिया का स्नान करवाया जाता है। इसमें गन्ने का रस, 350 लीटर दूध, 75 किलो चावल का आटा मिलाया जाता है और ऊपर से चंदन और हल्दी का छिड़काव किया जाता है। इस दस्तावेज से जैन समुदाय के सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं की गहराई का पता चलता है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 22

****

देव वाद्यनगल
(केरल के मंदिर उपकरण)
भाग प्रथम और द्वितीय

निर्देशक : आर सारथ
अवधि : प्रकरण (एपिसोड) प्रथमः 29 मिनट 11 सेकंड
प्रकरण (एपिसोड) द्वितीयः 28 मिनट 36 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

यह फिल्म मंदिरों के विभिन्न धार्मिक परंपराओं और रिवाजों को संपन्न करने हैतु वाद्य उपकरणों द्वारा उत्पन्न ध्वनियों की जटिलताओं का वर्णन करती है। जैसे पंच वाद्य के आधार पीनी का उपयोग भगवान की मूर्ति को बाहर निकालने के लिये किया जाता है। इसके अलावा फिल्म में केरला के कम लोकप्रिय मंदिर के वाद्य उपकरण मद्दलाम, त्याम्बका कोम्पू, कुझाल और पंच वाद्यम जैसे सुधा मद्दलाम, एदाका, कोम्पू और इलाथलम का उल्लेख भी किया गया है। इस फिल्म में गुरुवयूर परंपरा के बारे में बताया गया है जहां पर त्रावणकोर विद्यालय में इन वाद्य उपकरणों को बजाने की दीक्षा दी जाती थी। इन उपकरणों को बजाने की परंपरा के बारे में संगीतकारों ने अपने विचार भी रखे है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 23
****

बृहदेश्वर मंदिर
तंजावुर
महाकुंभ अभिषेकं
(जून 1997)

निर्देशक : जय चंदीराम
अवधि : 57 मिनट 37 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

फिल्म बृहदेश्वर मंदिर का वर्णन भी करती है जिसे राजाराजा चोला (985-1012 ई.) में भगवान शिव के सम्मान बनाया था जिसमें शिव नटराज के रूप में नजर आते है। इस मंदिर के वास्तु शिल्प में 500 फीट ऊंची दीवार पर आपको भगवान शिव की 108 नृत्य की मुद्राओं के दर्शन होंगे।

तमिलनाडु के थंजावुर के 1000 साल पुराने चोला में ब्रहदिस्वरा मंदिर को 12 सालों के बाद महाकुंभ अभिषेकम के लिये फिर से पवित्र किया जाता है। इस फिल्म में अभिषेकम परंपरा के दौरान संकल्प से लेकर मंदिर पर पवित्र पानी डालने के दुर्लभ दृश्य हैं। इस प्रक्रिया में 132 यज्ञ आहूतियां दी जाती हैं। इस पूजा में नवग्रहों की शांति के लिये घड़ों के पवित्रीकरण और पूजा की सही विधि पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है। इस दुर्लभ दस्तावेजी फिल्म में महाकुंभ अभिषेकम की परंपरा और मौखिक रीति रिवाजों की उत्कृष्ट धरोहर का चित्रण है। जो भविष्य के निर्देशों के लिये बहुत उपयोगी साबित होगा।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 24
****

दक्षिण कन्नड़ - देवी माँ की भूमि
भाग प्रथम और चतुर्थ

निर्देशक : एस. एस. राजेश
अवधि : प्रकरण (एपिसोड) प्रथम-चतुर्थ -1 घंटा 54 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

इस फिल्म में दक्षिण कर्नाटक के सभी समुदाय और जातियों के संदर्भ में देवी माता की पूजा की परंपरा की महत्ता का उल्लेख किया गया है। ये फिल्म नारी देवीय शक्ति के पौराणिक महत्व के बारे में बताती है जिनका संबंध महापुराणों से है। नारी देवीय शक्ति के सृजन, प्रजनन और विध्वंसक रुपों को वर्णन करती है। फिल्म के दूसरे भाग में देवी मां के विभिन्न रुपों का वर्णन किया गया है जैसे मरियम, महाकाली, श्रीदेवी, महाअंबा इत्यादि। ये मंगला देवी, नवरात्रों , मंगलोर की धरोहर कादारी मंदिर, मछुआरों की इष्ट देवी और भक्त जनों की समाधि के चित्रों दर्शाती है। यह फिल्म पौराणिक कथाओं और अगरी मान्यताओं से जुड़े प्रसंगों के बारे में जानकारी देती है। यह फिल्म दक्षिण कन्नड़ के अंबुदेश्वर, महालिंगेश्वर, अधिलक्ष्मी और दुर्गा परमेश्वरी मंदिर चित्रों को दर्शाती है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 25

****

पौराणिक और संथाल के ब्रह्मांड विज्ञान

बनाम

निर्देशक : बप्पा रे
अवधि : 42 मिनट 57 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

संथाल समुदाय के लोग प्रकृति के नजदीक रहते हैं। समुदाय के रूप में उनका संबंध पर्यावरण, परिस्थिति विज्ञान और दैवीय शक्तियों से है। इस फिल्म में जैविक और अजैविक पदार्थों के बीच के तारतम्य, मानवीय और अमानवीय समुदाय के फर्क और भौतिकता के प्रति उनकी सोच के बारे में बताया गया है।

संगीत और नृत्य संथाल समुदाय के लोगों के जीवन अभिन्न हिस्सा है। और उनका सबसे लोकप्रिय संगीत उपकरण 'बनाम' है जिसके बारे में उनका मानना है कि ये उन्हें वरदान के रुप में मिला है।

इस संगीत यंत्र से संथाल समुदाय की पौराणिक कथा जुड़ी है। जिसमें प्रकृति और मनुष्य के रिश्ते के बारे में बताया गया है। संथाल 'बनाम' को अपने शरीर का एक हिस्सा मानते है। ये जुड़ाव शब्द संरचना और श्रवण से है। हालांकि बनाम संगीत यंत्र की संरचना औरत के शरीर जैसी है लेकिन इसे पुरुष बजाते हैं। संथाल लोग बनाम की बनावट करते समय उसके कई भागों को मनुष्य के शरीर की तरह बनाते है। इसलिए बनाम की संरचना सिर, कान, गर्दन, छाती और पेट में विभाजित होती है। बनाम के उपकरण पृथ्वी या शरीर की संरचना से प्रेरित होते है। बोहोक (सिर) आकाश की तरह ऊपर सबसे ऊपर होता है। होटोक (गर्दन) और कोरम (सीना) श्वास संबंधी अंग है और सांकेतिक रूप में वायु से संबंधित है। पेट को अग्नि तत्व से जोड़ा जाता है और वक्ष स्थल को पानी से। तार को श्वास की उपमा दी जाती है जिससे संगीत और शरीर दोनों शक्तियों में जीवन का संचार होता है।

यह फिल्म 'बनाम संथाल समुदाय के पौराणिक और ब्रह्माण्ड विज्ञान' पर आधारित है जो बनाम के निर्माण के विभिन्न स्तरों की व्याख्या करती है। बनाम यंत्र गुलांज बहा या गुला सिन पेड़ के एक ही लकड़ी के लट्ठे से बनाया जाता है। इस पेड़ की लकडियां बहुत मुलायम और छोटी होती है। संथाल समुदाय के लोग इस पेड़ को ज्यादातर अपन घरों के आस-पास लगाते है जिसमें मधुर सुगंध वाले फूल लगते है। इन फूलों का इस्तेमाल संथाल महिलाएं आभूषण बनाने में करती हैं। इस पेड़ की शाखाएं बहुत पतली और नाजुक होती है जिसकी लकड़ी बहुत नर्म, हल्की होती है और इस्तेमाल में आसान होती है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 26

****

(खजाने की खोज में..... कोलकाता और गुवाहाटी)

निर्देशक : आर. भारथाद्री
लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी
अवधि : 82 मिनट 46 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

कलकत्ता विश्वविद्यालय हस्तलेख ग्रंथालय: कलकत्ता विश्वविद्यालय के हस्तलेख ग्रंथालय में कागज की पाण्डुलिपियों का बड़ा संग्रह है। इस लाइब्रेरी के रखवाले समय-समय पर आजमाए गए विधियों का प्रयोग करते हैं। यह फिल्म बताती है कि किस प्रकार से ये संग्रह बनाए गए साथ ही कुछ लेखों पर भी प्रकाश डालती है। सप्त रत्न: बौद्धों के सात पवित्र प्रतीक, अष्ट सहास्रिका प्रज्न परमिता, दवाओं पर तिब्बत के हस्तलेख, चैतन्य चरितामृता पर 250 साल पुराना उड़ीया लेख, 300 साल पुराना वेंदात हस्तलेख इत्यादि

एशियाटिक सोसाइटी, कोलकाता: एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना 1783 में सर विलियम जोन्स ने की थी। आज इस सोसाइटी में 26 भाषाओं में करीब 47000 हस्तलेख हैं। इस संग्रह को इकट्ठा करने में राजा राजेंद्र लाल मित्र और हरा प्रसाद शास्त्री का अहम योगदान रहा है। विद्वानों के लिए एशियाटिक सोसाइटी सोने की खान की तरह रही है। आइन-ई-अकबर, कुब्जीकमाटम, तर्जुमा-ए-महाभारत, व्यू ऑफ कलकत्ता (कलकत्ता का दृश्य 1848 इत्यादि) फिल्म में दिखाए गए कुछ हस्तलेख हैं।

बंगिया साहित्य परिषद: फिल्म इसके बाद बंगिया साहित्य परिषद का जिक्र करती है। इसमें भारी संख्या में संस्कृत और बंग्ला के हस्तलेख हैं। जो हस्तलेख फिल्म में दिखाए गए हैं उनमें से प्रमुख हैं- पंद्रहवी सदी में लिखा गया पंचरक्षा बौद्ध लेख, नेवारी हस्तलेख और 600 साल पुराना श्रीकृष्ण किर्ताना हस्तलेख।

संस्कृत साहित्य परिषद: संस्कृत साहित्य परिषद हमारा अगला पड़ाव था। देश के लिए धरोहर माने जाने वाले हस्तलेखों को सहैजकर रखने के लिए कलकत्ता के मेयर के तौर पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने इसके लिए जमीन दी। ताड़ के पत्तों और छाल पर लिखे गए महाभारत और भागवत महापुराण की दुर्लभ झलकियां भी हमारे कैमरे में कैद हुईं।

गुवाहाटी विश्वविद्यालय पुस्तकालय: फिल्म गुवाहाटी की शक्तिपीठ के विशेष संदर्भ में गुवाहाटी के तमाम पहलुओं पर प्रकाश डालती है और चित्रों के माध्यम से समझाए गए 13वीं सदी के हस्तलेखों के विशाल संग्रह का सर्वेक्षण करती है। ये कई तरह की लिपियों में अगारू नामक पेड़ की छाल पर लिखे गए हैं। इस छाल की विशेषता यह है कि इसमें कीड़े नहीं लगते हैं। इस फिल्म में इतिहासकारों का मत भी रिकॉर्ड किया गया है (अंग्रेजी में साउंड बाइट)। साथ ही इस फिल्म में पारंपरिक व्यवस्था की झलक देखने को मिलती है तथा 17वीं सदी में लिखित चित्रों के माध्यम से व्याख्या किए गए लव कुश युद्ध, उद्धव संवाद (पत्तियों के रस, गो-मूत्र का उपयोग रंगों के तौर पर किया गया है) जैसे दुर्लभ हस्तलेखों का वर्णन भी मिलता है। साथ ही 16वीं सदी में लिखे गए भागवत् को भी भी इस फिल्म में दिखाया गया है।

कामरूप अनुसंधान समिति: इ.गाँ.रा.क.के. की कैमरा टीम ने कामरूप अनुसंधान समिति का भी दौरा किया जिसकी स्थापना 1912 में हुई थी। इसमें करीब 300 दुर्लभ हस्तलेख संभाल कर रखे गए हैं। फिल्म में जो हस्तलेख दिखाए गए हैं उनमें से कुछ प्रमुख हैं- कवि हरिहर विपरा की लवकुश युद्ध, सांची पत्र पर लिखा गया महाभारत का आदिपर्व, असमी लिपि में लिखा गया गीत गोविंद, चित्रों के माध्यम से समझाए गए अनंत आचार्य की आनंद लहरी और 17वीं सदी में लिखा गया हस्तलेख सचित्र सुंदर कांड।

नारायणी हांडिकी ऐतिहासिक संस्थान (नारायणी हांडिकी हिस्टॉरिकल इंस्टीट्यूट): इस संस्थान में अगारू नामक पेड़ की छाल पर लिखे गए हस्तलेख हैं। 17वीं सदी का हस्तलेख शल्प पर्व, हस्ती विद्यारण्यय (हाथियों के उपचार के बारे में लिखा गया हस्तलेख), तंत्र विद्या से संबंधित लेख बटुक भैरव, अंकिया नाट और माधव कांदली द्वारा रचित लंका कांड को फिल्म में दिखाया गया है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 27

****

विज़डम फ्रोजन इन टाइम – द्वितीय खंड

निर्देशक : आर. भारथाद्री

लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी

अवधि : 88 मिनट 49 सेकंड

इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

गवर्नमेंट ओरिएंटल मैन्युस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, मद्रास यूनिवर्सिटी, चेन्नईः राजकीय ओरिएंटल हस्तलेख पुस्तकालय, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई: ऐतिहासिक धरोहर बन चुकी इस हस्तलेख पुस्तकालय की स्थापना 1869 में हुई थी। इसमें कागज और ताड़ के पत्तों पर लिखे गए करीब 70,000 हस्तलेखों का विशाल संग्रह मौजूद है। खास बात यह कि लिखावट में वैज्ञानिक शैली का प्रयोग हुआ है। यह पुस्तकालय प्राचीन भारत की अद्भुत विरासत को सहैजे हुए हैं। इसमें आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी चिकित्सा पद्धति और औषधि, वेद, शास्त्र, भाषा, ज्योतिष शास्त्र, वास्तु कला जैसे गूढ़ और महत्वपूर्ण विषयों पर लिखे गए हस्तलेख रखे गए हैं। फिल्म में हमनें जिन हस्तलेखों को दिखाया है वो हैं- गणपति मंत्र, यंत्र के आकार में सूलिनी मंत्र, मानव शरीर रचना विज्ञान के बारे में हस्तलेख, चदुरंग (शतरंज), 1695 में लिखी गई नुरूद्दीन तेहरानी की कविताएं।

कप्पूस्वामी शास्त्री रिसर्च इंस्टीट्यूट, चेन्नई (कप्पूस्वामी शास्त्री शोध संस्थान): प्रोफेसर एस कप्पूस्वामी शास्त्री की स्मृति में इस संस्थान की स्थापना की गई थी। प्रोफेसर कप्पूस्वामी को दक्षिण भारतीय संस्कृति अनुसंधान के संस्थापक के तौर पर जाना जाता है। इस संस्थान में जीवन के हर क्षेत्र से जुड़े हुए विषयों पर हस्तलेखों का विशाल संग्रह है जिसमें प्राचीन भारतीय दर्शन, औषधि, यंत्र के रेखा चित्रों के माध्यम से समझाए गए तंत्र, वैदिक और शास्त्रीय साहित्य शामिल हैं। भागवत, कृष्ण का जीवन, सामवेद के मंत्रोच्चार का हस्तलेख, यंत्र, औषधि से जुड़े हस्तलेखों को फिल्म में दिखाया गया है।

ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, मैसूर (ओरिएंटल शोध संस्थान, मैसूर): इस फिल्म में ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट में मौजूद हस्तेख विरासत के साथ मैसूर शहर के परिदृश्य को दिखाने का प्रयास किया गया है। 110 साल पुराना ये संस्थान पहले मैसूर का राजकीय पुस्तकालय था। इस हैरिटेज पुस्तकालय में करीब 70,000 हस्तलेख हैं। इस संस्थान ने अप्रकाशित हस्तेलेखों को लेकर 201 पुस्तकों का प्रकाशन कराया है। ये पुस्तकें वेद, ज्योतिष, खगोल विज्ञान, नाट्यशास्त्र, रस सिद्धांत, ध्वनि सिद्धांत और औषधियों इत्यादि पर केंद्रित हैं। यह फिल्म कुछ अत्यंत दुर्लभ हस्तलेखों पर प्रकाश डालती है जैसे कि 500 साल पुराने कौटिल्य द्वारा लिखित अर्थशास्त्र, 230 पत्तियों की वल्मीकि रामायण, वीरमाहैश्वर संग्रह कवि नागनाथ, प्रतिपाद पंचिका और दीर्घ काल के लिए दवाओं को सुरक्षित रखने की तकनीक के ऊपर गोविंदाचार्य का आयुर्वेदिक हस्तलेख आदि।

एकाडेमी ऑफ संस्कृत रिसर्च, मेलुकोटे (संस्कृत अनुसंधान अकादमी, मेलुकोटे): एकैडमी ऑफ संस्कृत रिसर्च का मुख्य क्षेत्र विज्ञान तथा तकनीकी रहा। 10 भिन्न लिपियों के 10500 रचनाओं पर प्रकाश डाला गया, जिनमें तिब्बती लिपि, आयुर्वेद, चार वेदों, शिक्षा, व्याकरण, छंद समेत वेदांगों की पांडुलिपियां शामिल हैं। ऐसी कुछ पांडुलिपियां हैं: तेलुगु लिपि में उपनिषद, ग्रंथ लिपि में रामायण; कृष्णकथासार संग्रह 18वीं सदी के कन्नड़ लिपि में; हिरण की त्वचा के पांडुलिपियों का इस्तेमाल आधिकारिक संपर्कों में किया जाता था।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.

परिग्रहण सं. 28

****

विज़डम फ्रोजन इन टाइम – तृतीय खंड

निर्देशक : आर. भारथाद्री
लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी
अवधि : 72 मिनट 46 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

तमिल विश्वविद्यालय, तंजावुर: तमिल विश्वविद्यालय में ताड़ पत्रों पर लिखे गए 8000 हस्तलेखों के साथ राजस्व रिकॉर्ड के 500 गट्ठर उपलब्ध हैं। इस फिल्म में 700 पत्तों वाले एक 300 साल पुराने हस्तलेख, व्यक्तिगत मुहर वाले एवं कबूतर के द्वारा पहुंचाए जाने वाले पत्र, पक्षी शास्त्र, 15वीं सदी के तमिल व्याकरण, छात्रों द्वारा लिखे गए कागय के साथ अंक ज्योतिष के हस्लेख, चित्रों के माध्यम से समझाए गई रास लीला इत्यादि को दिखाया गया है।

सरस्वती महल, तंजावुर: यह फिल्म तंजावुर के राजसी शहर का दिग्दर्शन कराती है और उसका अन्वेषण करती है, एक पुजारी को दिखाती है जो आज भी ताड़ के पत्तों पर लिखता है और फिर यह फिल्म सरस्वती महल में प्रवेश करती है। सरस्वती महल दुर्लभ हस्तलेखों, मानचित्रों, पेंटिंग और किताबों का अद्भुत खजाना है। इसमें ताड़ पत्रों पर लिखे गए 30433 हस्तलेख और 6426 किताबें हैं। यह फिल्म इन हस्तलेखों के रुपांतरण के कई मोड़ पर प्रकाश डालती है। संस्कृत में नानाविधा निघंटू, तेलगू शब्दकोश, कंब रामायण, 1801 में महाराजा सर्फोजी द्वारा ताड़ पत्रों पर बनाई गई हस्तेखों की सूची को भी इस फिल्म में दिखाया गया है।

राजकीय संग्रहालय, भुवनेश्वर: यह फिल्म भूवनेश्वर की शानदार वास्तुकला की रूपरेखा को संस्थापित करती है और उड़ीसा के हस्तलेखों की अद्भुत विरासत को प्रस्तुत करती है। उड़ीसा का राजकीय संग्रहालय पहला पड़ाव हैं जहां पर प्रमुख रूप से ताड़ के पत्तों पर लिखे गए करीब 37,000 दुर्लभ हस्तलेखों का संग्रह देखने को मिलता है। यहां पर आप बौद्ध तिब्बती लेखों, ऑरनेट तांत्रिक लेखों के साथ सचित्र वैष्णव लेखों के भी दर्शन कर सकते हैं। यही नहीं तलवार, तोता, हाथ के पंखे, बांस के पत्ते, चूहा इत्यादि के स्वरूप में बनाए गए हस्तलेखों भी आपकों यहां पर देखने को मिलेंगे। हमारे कैमरे ने 18वीं सदी के कवि उपेंद्र भज्न द्वारा रचित चित्र काव्य, जयदेव द्वारा रचित गीत गोविंद समेत सर्वांग सुंदरी टीका जैसे हस्तलेखों की झलकियां कैद की।

उत्कल विश्वविद्यालय का पुस्तकालय (उत्कल यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी): अगड़ा पड़ाव था उत्कल विश्वविद्यालय का परिजा पुस्तकालय। इस हस्तलेख पुस्तकालय में ताड़ के पत्तों पर लिखे गए हस्तलेखों का विशाल संग्रह मौजूद है। ये हस्तलेख मुख्यरूप से जगन्नाथ मंदिर से लाए हैं और इनमें तौन-तरीकों, परंपराओं और प्रशासन का वर्णन है। कुछ हस्तलेख दशावतार और देवी शास्त्र के बारे में हैं

केदारनाथ गवेषण प्रतिष्ठान, भुवनेश्वर: भुवनेश्वर में अगला स्टेशन केदारनाथ गवेषण प्रतिष्ठान था। इस पुस्कालय में ताड़ पत्र पर लिखे गए करीब 3000 दुर्लभ हस्तलेख हैं। इनमें से कुछ हस्तलेख गणित, गीत गोविंद वेद इत्यादि पर हैं।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.

परिग्रहण सं. 29

****

गंगा –मुखबा से गंगोत्री के लिए एक यात्रा

निर्देशक : बी. एस. रावत
लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी
अवधि : 46 मिनट 04 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

फिल्म बर्फ से ढ़की हिमालय की चोटियों को दिखाती है और गोमुख के ग्लेशियर की झलकियों को कैमरे में कैद करती है। यह गंगा का उद्गम स्थल हैं और यहीं से गंगा द्वारा निर्मित जल सभ्यता की शुरुआत होती है। बंगाल में खाड़ी में जाकर मिलने से पहले पवित्र गंगा नदी करीब 2500 किलोमीटर की दूरी तय करती है। यह फिल्म गंगा आइकन (प्रतीक) के दो स्वरूपों का दर्शन कराती है। पहला गर्मी के मौसम में गंगोत्री का और दूसरा 25 किलोमीटर नीचे मुख्य अधवा मुखीमठ नामक स्थान पर, जहां से वो दीपावली के बाद की यात्रा शुरू करती है।

यह फिल्म गंगा की यात्रा को उसके आरंभ मुख्बा से ही कैद करती है। गंगोत्री मंदिर अक्षय तृतीया के शुभ दिन पर खुलता है। इ.गाँ.रा.क.के. की कैमरा टीम ने भिन्न-भिन्न रीति-रिवाजों, मौखिम मिथकों और सदियों से प्रचलन में रहै सामाजिक धार्मिक संबंधों का जायजा लेने और उन्हें कैमरे में कैद करने के लिए 25 किलोमीटर की चढ़ाई (ट्रेकिंग) की। फिल्म इस बात पर प्रकाश डालती है कि कैसे ग्राम देवता सोमेश्वर देव अपनी श्रद्धा अर्पित करने के लिए मुख्बा आते हैं और कैसे गंगा आइकन मारकण्डेय मुनि के आश्रम की तपोभूमि में अवस्थिक अन्नपूर्णा मंदिर में जाती है। इसके बाद डोली गंगा के दूसरे पड़ाव के लिए दुर्गा सिद्ध पीठ को जाती है।

इसके बाद वो पत्थरों के बोल्डरों, पगडंडियों और रास्तों से गुजरते हुए ITBP (भारत-तिब्बत सीमा पुलिस) के कैंप कोपांग पहुंचने से पहले एक पौराणिक स्थल जांगला पहुंचती है। इसके बाद की यात्रा करके वो भैरव घाटी पहुंचती हैं जहां पर रात्रि विश्राम के लिए गंगाजी का स्वागत करने के लिए मंदिर खुलता है। उसके बाद अक्षय तृतीया के दिन गंगाजी की यात्र गंगोत्री तक जाकर समाप्त होती है और वहां पर भव्य उत्सव की शुरुआत होती है। इस प्रकार फिल्म गंगाजी की पद यात्रा को रिकॉर्ड करती है, सेमवालों के मौखिक परंपराओं का दर्शन कराती है, गंगा देवी के पुजारियों को दिखाती है, गंगोत्री के प्रसाद आशीर्वाद का प्रकृति के साथ संबंधों पर प्रकाश डालती है, कपाट के खुलने के दौरान के रीति-रिवाजों को कवर करती है, गंगोत्रों में गंगा मंदिर के खुलने के दृश्य को दिखाती है। गंगा की प्रतीक (गंगा का रूप धारण करने वाली लड़की) हर साल बिल्कुल एक ही तरीके से दीपावली के बाद मुखबा को लौट जाती है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 30

****

नागमंडल – नाग पूजा

निर्देशक : शिव प्रसाद
अवधि : 43 मिनट 12 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

नाग या सांप पूजा प्राचीन भारतीय परंपरा है। नाग की पूजा नागदोष से मुक्ति पाने के लिए और उर्वरया और समृद्धि के लिए की जाती है। हजारों साल से श्रद्धालु कुमारधारा नदी के किनारे परशुराम की धरती पर आते रहै हैं। यह पवित्र कुक्के श्री सुब्रमण्यम क्षेत्र के लिए तीर्थस्थल है। यह फिल्म मंदिर की क्रियापद्धति में पारंपरिक लोक और शास्त्रीय विचारधारा या मत के सह-अस्तित्व पर प्रकाश डालती है। यही नहीं यह फिल्म कृषि संबंधी सिद्धांतों एवं उनके अनुपालन और बौद्ध परंपरा के छठे विभाग में उल्लिखित नागों के बारे में जानकारी देती है। साथ ही यह फिल्म मंदिरों की नगरी उदिपी को भी प्रदर्शित करती है और आपको यह पारंपरिक चीटी की पहाड़ी स्टाइल में बने गावों का भी परिभ्रमण कराती है जहां पर नागाओं की पूजा की जाती है। इन नागों को घड़ों के बगल में रखा जाता है और इन घड़ों के उपर की सजावट कुंडलीनुमा सांपों से की गई होती है। यह फिल्म नागा बाना का भी उल्लेख करती है जहां पर एक पेड़ की जड़ के पास कृषि संबधी त्यौहार के हिस्से के तौर पर नागों की सैकड़ों प्रतिमाएं रखी गई होती हैं। यह विपदा से बचाने के लिए नागमंडला उत्सव मनाती है जिसमें रंगोली के उपर रखे गए 64 तरह के नागों के पूर्वज की शांति के लिए पूजा की जाती है। बहुरंगीय रंगोली में लपेटे गये सांप, दिनभर चलने वाला हवन और रात भर नाग और नागिन का नृत्य उर्वरता और समृद्धि को दर्शाते हैं।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 31

****

मैसूर का लोक कथा संग्रहालय

निर्देशक : एम. लिंगराज
अवधि : 75 मिनट 12 सेकंड (3प्रकरण (एपिसोड))
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

यह डॉक्युमेंटरी (वृत्तचित्र) कर्नाटक की आदिवासी दुनिया की थाह लेता है और उनके औजारों के बारे में बताता है। यह लोकाचार की वृहत दिशाओं के भीतर अद्वितीय लोकसाहित्य के बारे में बता है। यह भूत-आराधना और लकड़ी की मूर्तियों के सिद्धांत की परीक्षण करता है। साथ ही इस क्षेत्र के पारंपरिक समाज पर देवी मां के प्रभाव की भी जांच करता है। इसके बाद फिल्म की विषय वस्तु वीरगाथा नृत्य ध्वनिकी और संगीत वाद्ययंत्रों पर स्थांनांतरित हो जाती है। फिर हम दक्षिण कर्नाटक में मछली पालन की दुनिया का भी जायजा लेते हैं और इसके बाद हम उस क्षेत्र में कुम्हारी, दियों, खाद्य सामग्री, सौंदर्य प्रसाधन और कंघी बनाने की काल के बारे में बताते हैं। यह यात्रा कृषक समाज के विभिन्न साधनों के बारे में भी जानकारी देती है। जैसे कि बीज की बुआई, सिंचाई, कटाई और फिर उत्पाद का मापन। फिर कहानी का फोकस यक्षागना और छाया कठपुतली के खेल के जरिए उत्सव पर होता है। इसके साथ ही फिल्म गतिशील रचनात्मकता के हर एक परलू का सूक्ष्मता के साथ अध्ययन करती है। इसमें ऊंट के कूबड़ की खाल से तेल के भंडारण के लिए चमड़े की थैली बनाना, बुजुर्गों के लिए सांप जैसी और शेर की मुखाकृति वाली छड़ी बनाना और गाय के चमड़े से थैले और मुंह ढंकने के लिए वस्त्र बनाना शामिल है। यह फिल्म लोक संसार के ग्राम देवता के वास्तुकला और मूर्त एवं अमूर्त विरासत के बीच संबंधों पर भी प्रकाश डालती है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 32

***

कथकली - केरल की कला (भाग प्रथम)

निर्देशक : एन. राधाकृष्णन
अवधि : 1 घंटा 18 मिनट
(प्रकरण (एपिसोड) -1, 2, 3)
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

केरल के पारंपरिक कला (नृत्य कला) स्वरूप कथकली का पता सात भागों में लगाया गया है। कथक कहानी होता है और कली नाटक। इसमें कलाकार बिना मुखौटे लगाए, चेहरे को बिना ढंके या गुप्त रखे अपनी कला का प्रदर्शन करता है। हालांकि कलाकार इसमें मेक-अप के जरिए अपने चेहरे के हाव-भाव को बढ़ाता है और पूरे कथानक को व्यक्त करता है। यह फिल्म इस कला में पारंगत पुराने जमाने के गुरुओं के बारे में भी बताती है। फिल्म में यह भी दिखाया गया है कि बारिश के मौसम के दौरान गुरु-शिष्य में परंपरा में इस कला को सीखने लिए कैसे एक शिष्य अपने गुरु को गुरु-दक्षिणा देता है। शरीर को फुर्तीला और तीक्ष्ण बनाने के लिए व्यायाम, सांस रोक पाने का अभ्यास और आयुर्वेदीक तेल की मालिश पर भी इस फिल्म के माध्यम से प्रकाश डाला गया है। यह फिल्म आपको नमस्कार करने के पांच तरीकों-नमस्कारा पंचकम, केट्टि छट्टम, चौवरिनमल ऊनी अमारल, थंचम वेचू, चविटी थाझुका जैसे व्यायामों और उनकी महत्ता के बारे में भी जानकारी देती है। ये व्यायाम शरीर को लचीला और मजबूत बनाते हैं जिसका प्रयोग नृत्य के क्रम काल माटम में होता है। काल माटम कथलकी की मूल और प्रारंभिक मुद्रा है। यह फिल्म सात चुरूकू या व्यायामों के बारे में बताती है जो कि आंख, हाथ और शरीर के मध्य समन्वय स्थापित करने में मदद करते हैं। हस्त लक्षण दीपिका से घड़ी के विपरीत दिशा में हाथ को घुमाने के हाव-भाव पर भी यह फिल्म प्रकाश डालती है। फिर इस फिल्म का फोकस वास्तविक प्रदर्शन दक्षयज्ञनम पर हो जाता है और कथकली में संप्रेक्षण की दो प्राथमिक भाषाओं ड्रम की ध्वनि और मुद्रा के बारे में आपको जानकारी देती है। फिल्म आठ प्रमुख भावों को दर्शाने के लिए रसों पर प्रकाश डालती है जो कि आपस में जुड़े होते हैं।

दूसरी विशिष्टताएं अभिनय संगीतम का क्रमिक विकास है जिसमें जजमानीय व्यवस्था पर विशेष ध्यान होता है। अंतिम रूप से रावण और मंदोदरी, बाली सुग्रीव और श्वेत हनुमान-वेल्ला थड्डी के अभिनय से पहले मेक-अप की अवधारणा को विस्तृत रूप से जांच-परख लिया जाता है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 33

****

कथकली - केरल की कला (भाग द्वितीय)

निर्देशक : एन. राधाकृष्णन
अवधि : 1 घंटा 33 मिनट
प्रकरण (एपिसोड) No.-4, 5, 6 & 7
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

केरल के पारंपरिक कला (नृत्य कला) स्वरूप कथकली का पता सात भागों में लगाया गया है। कथक कहानी होता है और कली नाटक। इसमें कलाकार बिना मुखौटे लगाए, चेहरे को बिना ढंके या गुप्त रखे अपनी कला का प्रदर्शन करता है। हालांकि कलाकार इसमें मेक-अप के जरिए अपने चेहरे के हाव-भाव को बढ़ाता है और पूरे कथानक को व्यक्त करता है। यह फिल्म इस कला में पारंगत पुराने जमाने के गुरुओं के बारे में भी बताती है। फिल्म में यह भी दिखाया गया है कि बारिश के मौसम के दौरान गुरु-शिष्य में परंपरा में इस कला को सीखने लिए कैसे एक शिष्य अपने गुरु को गुरु-दक्षिणा देता है। शरीर को फुर्तीला और तीक्ष्ण बनाने के लिए व्यायाम, सांस रोक पाने का अभ्यास और आयुर्वेदीक तेल की मालिश पर भी इस फिल्म के माध्यम से प्रकाश डाला गया है। यह फिल्म आपको नमस्कार करने के पांच तरीकों-नमस्कारा पंचकम, केट्टि छट्टम, चौवरिनमल ऊनी अमारल, थंचम वेचू, चविटी थाझुका जैसे व्यायामों और उनकी महत्ता के बारे में भी जानकारी देती है। ये व्यायाम शरीर को लचीला और मजबूत बनाते हैं जिसका प्रयोग नृत्य के क्रम काल माटम में होता है। काल माटम कथलकी की मूल और प्रारंभिक मुद्रा है। यह फिल्म सात चुरूकू या व्यायामों के बारे में बताती है जो कि आंख, हाथ और शरीर के मध्य समन्वय स्थापित करने में मदद करते हैं। हस्त लक्षण दीपिका से घड़ी के विपरीत दिशा में हाथ को घुमाने के हाव-भाव पर भी यह फिल्म प्रकाश डालती है। फिर इस फिल्म का फोकस वास्तविक प्रदर्शन दक्षयज्ञनम पर हो जाता है और कथकली में संप्रेक्षण की दो प्राथमिक भाषाओं ड्रम की ध्वनि और मुद्रा के बारे में आपको जानकारी देती है। फिल्म आठ प्रमुख भावों को दर्शाने के लिए रसों पर प्रकाश डालती है जो कि आपस में जुड़े होते हैं।

दूसरी विशिष्टताएं अभिनय संगीतम का क्रमिक विकास है जिसमें जजमानीय व्यवस्था पर विशेष ध्यान होता है। अंतिम रूप से रावण और मंदोदरी, बाली सुग्रीव और श्वेत हनुमान-वेल्ला थड्डी के अभिनय से पहले मेक-अप की अवधारणा को विस्तृत रूप से जांच-परख लिया जाता है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 34

****

धर्मनिष्टा से धन-दौलत तक - धर्मस्थल पर एक वृत्तचित्र

निर्देशक : महेश तिवारी
अवधि : 36 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

धर्मस्थल की पवित्र भूमि दक्षिणी कर्नाटक के पश्चिमी घाट पर स्थित है।

कई सदियों से लिंग के स्वरूप में भगवान मंजूनाथ की पूजा होती रही है। शैवों के देवों की पूजा वैष्णव पुजारी के द्वारा की जाती है और पारंपरिक धर्माधिकारी जैन परिवार से होता है

यह फिल्म रीति-रिवाजों के अभिसरण पर फोकस करती है और चट्टान निर्मित मंदिरों और धर्मस्थल के लोक देवता या शिव गण में शास्त्रीय तत्त्वों को दिखाती है। स्वामी मंजूनाथ मंदिर में अनोखा न्यायिक शासन है। यहां पर भक्त अपनी याचना को स्वामी को लिखता है जो कि अपने सांसारिक प्रतिनिधि धर्माधिकारी के जरिए फैसला सुनाता है और यह कानून के द्वारा भी मान्य होता है। इन न्यायिक रिकॉर्ड्स को हॉयलू के नाम से जाना जाता है। दिलचस्प बात यह है संदर्भ के लिए इन्हें 1925 से लेकर अबतक क्रमवार व्यवस्थित ढंग से संभालकर रखा गया है। फिल्म में विशाल रसोईघर को भी दिखाया गया है जहां पर श्रद्धालुओं के भोजन के लिए प्रति दिन 5000 किलो चावल पकाया जाता है। फिल्म में यह भी दिखाया गया है कि हर तीन साल पर मंदिर प्रशासन सामूहिक विवाहों की भी व्यवस्था करता है। इन विवाहों के लिए पैसे का प्रबंध मंदिर ही करता है। इसके अलावा भी मंदिर परिसर में हर दिन सैकड़ों विवाह संपन्न होते हैं। यह फिल्म गिरिजाघर संबंधी विचार-विमर्श, गुरु कुल, संग्रहालय की शिल्पकृति और धरोहर हस्तलेखों की भी झलक प्रस्तुत करती है। यह भक्ति, अनुभाग, सम्प्रदायवादी सच्चाई, सहिष्णुता, प्रश्रय, और न्याय की भूमि धर्मस्थल को श्रद्धांजलि है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 35

****

सांझी

निर्देशक : बी. एस. रावत
लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी
अवधि : 30 मिनट 13 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

सांझी पंद्रह दिनों तक चलने वाली कलात्मक लोक परंपरा है। यह पूर्णिमा से शुरू होकर अमावस्या की रात तक चलती है। इसमें घरों की दीवारों पर चित्रकारी की जाती है। पितृ पक्ष के दौरान पूर्वजों को श्रद्धांजलि देने के लिए अविवाहित लड़कियों के द्वारा ये किया जाता है। यह परंपरा उत्तरी और मध्य भारत में कई जगहों पर प्रचलन में है। इ.गाँ.रा.क.के. ने इस परंपरा को राजस्थान के उदयपुर और मध्य प्रदेश के उज्जैन में अपने कैमरे में कैद किया। इसमें छोटी उम्र की लड़कियां अपनी मां की सहायता से दीवार पर गाय के गोबर और कई तरहों के फूलों से सांझी बनाती हैं। शाम में गोधूली के बेला के वक्त ये प्रक्रिया 15 दिन तक रोज की जाती है। लड़कियां दीवारों पर चित्रों का निर्माण करती हैं और सूरज निकलते ही इन चित्रों को मिटा देती हैं। संध्या देवी या संझ्या देवी का मिथक इस पारंपरिक उत्सव के केंद्र में है।

इस फिल्म में दिखाया गया है कि दीवारों पर चित्रकारी उन्हीं वस्तुओं की जाती हैं जो उनके मरे पूर्वजों से संबंधित होते हैं या जो उन्हें प्यारा होता है। लड़कियों को दीवारों पर पासे का खेल, टावर, मिठाई, हाथ का पंखा, स्वास्तिक, बुजुर्ग पुरुष या महिलाएं, कगला-कगली, सागा आदि बनाते देखा गया। इस उत्सव के जरिए लड़कियों को जीवन की कई बारीकियों का अध्ययन करने, समाज के बंधनों और बड़ों का आदर करना सिखाया जाता है। लड़कियां सांझी इसलिए बनाती हैं ताकि उन्हें अच्छे पति मिल सकें। इस फिल्म में इस रीति-रिवाज के रोमांचकारी पहलुओं को भलि-भांति दर्शाया गया है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 36

****

मैज़रिंग द स्काई (आकाश मापना)
(बृहदेश्वर मंदिर के लिए एक यात्रा)

निर्देशक : आर. भारथाद्री
अनुसंधान एवं लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी
अवधि : 26 मिनट 55 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

चोल राजाओं ने 995-100 ई. में एक विशाल और भव्य मंदिर का निर्माण कराया था जो आज वास्तुकला का नायाब नमूना है। सुब्रमण्य शैली में बना यह मंदिर चोल राजाओं की राजधानी रहे थंजावुर में स्थित है और ये चेन्नई से करीब 372 किलोमीटर की दूरी पर है। ये मंदिर की ऊंचाई 260 फुट है और इसमें 14 मंजिलें हैं। मंदिर का आधार चौकोर और आनुपातिक है जिसकी वजह से ये सदियों से सुरक्षित खड़ा है। यह शानदार मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। आकार में यह मंदिर अष्टभुजीय है और इसके चारों ओर से सभी देवी देवताओं के मंदिरों से सजाया गया है। मंदिर के अंदर बनाए गए देवी देवताओं के चित्र अतुलनीय हैं और दीवारों पर शिव पार्वती के चित्रों की नक्काशी की गई है। दीवारों पर आप पौराणिक कथाएं भी पढ़ सकते हैं। यद्यपि यह एक शिव मंदिर है फिर भी भगवान विष्णु के अवतार नरसिम्हा और भगवान कृष्ण के चित्र भी आपको देखने को मिलेंगे।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 37

****

मैसूर चित्र
(उस समय के रंगों का मिलान)

निर्देशक : आर. भारथाद्री
अनुसंधान एवं लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी
अवधि : 56 मिनट 23 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

मैसूर की चित्रकारी अपनी लयबद्धता, पौराणिक कथाओं की कल्पना और चमकदार रंगों की भव्यता के लिए मशहूर है। वहां की पेंटिंग्स जीवन के विभिन्न रूपों को दर्शाती हैं। यहां की पेंटिग्स सोच की गहराई को विस्तार में बताती हैं। मैसूर की पेंटिंग्स के एक बड़े संग्रह को अंतराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में दिखाया जाता है। पेंटिंग्स में हल्के रंगों का प्रयोग किया गया होता है जिसमें अधिकतर प्राथमिक रंग ही होते हैं। इनके किनारों पर सोने की अद्वितीय कलाकारी की गई होती है। मैसूर में चित्रकारी पारिवारिक परंपरा है और यहां पर बहुत से लोगों की आजीविका का आधार भी यही है। यहां पर एक संस्थान भी है जो पेंटिंग्स की मार्केटिंग का काम करता है। बंगलुरू में कुछ संस्थान इस प्रकार की पेंटिंग्स को बढ़ावा देने का भी काम करते हैं। इन पेटिंग्स की विचार संरचना धार्मिक और पौराणिक है। जामी पेंटिंग्स कहै जाने वाले पेंटिंग्स के समूह कहानियों पर आधारित होते हैं। लोकसाहित्य, ऐतिहासिक और स्थानीय मिथक सामान्य तौर पर इन पेंटिंग्स के आधार होते हैं।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 38

****

पत्तडकल मंदिर

निर्देशक : आर. भारथाद्री
लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी
अवधि : 21 मिनट 35सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

राजा विक्रमादित्य द्वितीय ने अपने शत्रुओं पर जीत का जश्न मनाने के लिए एक स्मारक का निर्माण कराया था। आठवीं सदी में कर्नाटक के बंगलुरू जिले में बनाया गया यह मंदिर स्मारक आज एक विश्व धरोहर स्थल है और मंदिर की वास्तुकला के उच्चतम शिखर को स्पर्श करता है। लोकेश्वर मंदिर के प्रवेश द्वार पर भगवान शिव की सवारी नंदी का पवित्र स्थान है। यह काले पत्थरों से निर्मित है। दीवारों पर अलंकारिक नक्काशी की गई है। सूर्यदेव इस मंदिर के संरक्षक हैं। वो बाहर से इसकी शोभा बढ़ाते हैं। मंदिर के खंभे ज्यामितीय श्रेणी में हैं और कोई भी खंबा दूसरे से मेल नहीं खाता है। कथानक शिव पुराण का है। विर्हापक्ष मंदिर का सभागार खंभों पर ही खड़ा है। शिवलीला, रामायण और महाभारत की कथा वहां पर देखी जा सकती है। शिवलिंग बिल्कुल एक मंदिर की शक्ल में है जिसमें तीन तरफ से दरवाजे हैं। यद्यपि यह मंदिर शिव को समर्पित है फिर भी वहां पर वैष्णव कहानियां भी हैं।

वहां पर दर्शाए गए प्रकरणों का सामाजिक-धार्मिक-सांस्कृतिक महत्व है। इकलौते इमारत में दस स्मारक हैं जिन्हें उनके वैभव, साज-सज्जा वाले डिजाइन और शिलालेख के लिए जाना जाता है। वहां बनी प्रतिमाएं और चित्र काफी ऊंचे मानकों के हैं। छोटे मंदिरों का कथानक पौराणिक है। वहां पर 748 पैनल हैं जो इस संसार को मुक्तेश्वर के दूसरे संसार से जोड़ने का काम करते हैं। ज्यादा ब्यौरे के लिए डॉक्युमेंटरी देखिए।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 39

****

भील चित्र

निर्देशक : बी. एस. रावत
अनुसंधान एवं लिपि : डॉ. गौतम चटर्जी
अवधि : 27 मिनट 53सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी भील अपनी रचनात्मक सोच और दिलचस्प विश्वास प्रणाली के लिए जाने जाते हैं. वो प्रकृति के अंक में खुले नीले आसमान के नीचे जीते हैं जहां का इलाका पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ है। वो शैव मत के हैं लेकिन विभिन्न नामों वाले 12 शिवलिंगों की वो पूजा करते हैं। पेंटिंग के प्रति उनका लगाव सम्मोहित कर देने वाला है। रंग बनाने के लिए वो बिल्कुल प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल करते हैं। उनके मंदिरों की दीवारें, उनके घर और यहां तक कि चट्टानों पर चित्रकारी की गई होती है। त्योहारों के दौरान वो शिव को प्रसन्न करने के लिए गवारी नृत्य नाट्य का करते हैं। अपना जीवन जीते हुए देखना ही काफी रोमांचकारी अनुभव है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 40

****

गोपी भट्ट का तमाशा

निर्देशक : गोपाल सक्सेना
अवधि : 32 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

एक ऐसे परिवार की प्रेरक कहानी जिसने कई अड़चनों के बावजूद, राजस्थान की लोकगीत परंपरा को जीवित रखने का प्रयास किया। गोपी भट्ट का 'तमाशा' एक ऐसी लक्षण सूचिका है, जो गायन और कथा-वर्णन की शास्त्रीय शैली में, संगीत का मिश्रण है। तीन मुख्य 'तमाशा' के शीर्षक हैं हीर-राँझा, जोगी-जोगन और गोपीचंद। राजा-महाराजाओं ने इस लोक-कला को संरक्षण दिया। राजतंत्र के उन्मूलन के बाद, इस कला को बुरे दिनों का सामना करना पड़ा। भट्ट परिवार के ज़बरदस्त साहस, दृढ़ संकल्प और पारंपरिक लोक-कला के प्रति प्रेम ने उसे विस्मृति के गर्त में जाने से बचाया। गोपी भट्ट को, जिनका प्रदर्शन यहाँ दिखाया जा रहा है, समाज में प्रतिष्ठा न मिलने के कारण बहुत कष्ट झेलने पड़े। उन्हें अपने भरण-पोषण के लिए एक मंदिर में 'पुजारी' का काम करना पड़ा। लेकिन उन्होंने प्रदर्शन जारी रखा। आम जनता के साथ संप्रेषण के लिए शास्त्रीय संगीत का उपयोग, इस लोक-कला की विशेषता है। भट्ट जी ने अपनी संतान में भी इस कला के प्रति प्रेम जगाया है और उनको उम्मीद है कि वे उनके काम को आगे बढ़ाएँगे। इस उम्र में भी वे अपनी कला के प्रति पूर्णतः समर्पित हैं।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 41

****

बिदेसिया

(बिहार का लोक नृत्य)

निर्देशक : राजन
अवधि : 28 मिनट 03 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

बिदेसिया अपनी ज़ोरदार प्रस्तुति, भाषा की सरलता और अपरिष्कृत शैली के लिए विख्यात है। यह नृत्य का कोई रूप नहीं, बल्कि एक प्रकार का 'तमाशा' है, जिसमें क्षेत्र की संस्कृति प्रतिबिंबित होती है। यह विविधता और भावनात्मक सामग्री से समृद्ध है। नाटक की सामग्री में शामिल हैं वाक्-संवाद, 'पद' जैसे कविता के विभिन्न प्रकार, लघु-कविता, 'वचन', गीत, ग़ज़ल और नृत्य। इसका मंचन रात को एक ऊँचे टीले पर किया जाता है, जो मंच का काम करता है, और इसके लिए स्थानीय रूप से उपलब्ध रोशनी का उपयोग किया जाता है। वस्त्र और मेक-अप के लिए सिंदूर, काजल आदि जैसी स्थानीय सामग्रियों का उपयोग किया जाता है। भोजपुरी रंगमंच के प्रतिष्ठित कलाकार भिखारी, ठाकुर ने विशेष रूप से बिदेसिया नामक स्वरूप को अपने रंगमंच पर लोकप्रिय बनाने के लिए ज़बरदस्त काम किया है और दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया है। उन्होंने भोजपुरी बोली में कई नाटक लिखे हैं, जो प्रकाशित भी हुए हैं। अधिक जानकारी के लिए फ़िल्म देखें।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 42

****

यह एक गुलाब
(पद्मश्री गुलाब बाई की नौटंकी परंपरा पर एक फिल्म)

निर्देशक : राधिका पुल्लत
अवधि : 1 घंटा 14 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

प्रख्यात कलाकार गुलाब (मृ.1996) की यात्रा, जो संभवतः पुरुष-प्रधान नौटंकी से जुड़ने वाली पहली महिला कलाकार थीं। बालपोरा के सामान्य किसान परिवार में जन्मी गुलाब, स्वयं-प्रशिक्षित कलाकार, कुशल अभिनेत्री, सतत परिवर्तनशील असंख्य स्वरों के उतार-चढ़ाव के साथ मधुर आवाज़ की धनी थीं। गुलाब को नवीन विचारों, विषयों और नवोन्मेषी शैलीगत सुधार और भाषाई बारीक़ियों से ह्रासमान लोक रंगमंच की उदार परंपरा को पुनर्जीवित करने के अथक प्रयासों के लिए हमेशा याद किया जाएगा। उन्हें असंख्य अन्य पुरस्कारों के अलावा पद्मश्री, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 43

****

ग्रेट मास्टर्स सीरीज - उस्ताद फहीमुद्दीन खान डागर

निर्देशक : जय चंदीराम
अवधि : 1 घंटा 20 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

उस्ताद फ़हीम-उद्-दीन ख़ान डागर संगीतज्ञ डॉ. एस.के.सक्सेना के साथ परस्पर-वार्तालाप के सत्र में अपने प्रदर्शनों की सहायता से, ध्रुपद के विभिन्न चरण, उसका तात्पर्य, उद्देश्य, तत्व और बारीक़ियों को समझाते हैं। आलाप - प्रवर्तन का उद्देश्य किसी भी राग के विशिष्ट लक्षणों को उजागर करना है। संगीत का अपना अलग व्याकरण है, और फ़हीम-उद्-दीन संगीत की मूलभूत अवधारणाओं और भाषा को स्पष्ट करते हैं। प्रत्येग 'राग' का अपना ही 'मुक़ाम' या स्थान होता है। राग भैरवी सूरज के प्रति श्रद्धांजलि, प्रकाश के प्रति श्रद्धा प्रकट करना है। लेकिन इसमें शब्द नहीं हैं, क्योंकि, 'सुर' शब्दों का बोझ नहीं सह सकता। 'विद्या' या ज्ञान ज़रूरी है, लेकिन इसे पाने के लिए गुरू, शिक्षक का होना ज़रूरी है। रियाज़ या अभ्यास महत्वपूर्ण है, लेकिन उससे भी ज़्यादा ज़रूरी है समर्पण। संगीत शांति की खोज है, जब कि कविता अंतर्मन को छूती है। शास्त्रीय संगीत के बारे में अधिक जानकारी के लिए, इसे देखें।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 44

****

ग्रेट मास्टर्स सीरीज - परावर्तन - बीसीसान्याल और एलिज़ाबेथ ब्रूनर

निर्देशक : जय चंदीराम
अवधि : 53 मिनट 47 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

बी.सी. सान्याल का कथन 'मैं चित्रकारी इसलिए करता हूँ, क्योंकि मैं चित्रकला के लिए बना हूँ' दरअसल सान्याल का हाथ में ब्रश थामे और चित्रित करने की अपनी ललक को अभिव्यक्त करने का ख़ास अंदाज़ है। वे चित्रकार ही नहीं, मूर्तिकार भी हैं। बंगाली होने के नाते, दुर्गा पूजा से वे परिचित थे, और मूर्तियाँ गढ़ने में उनकी अभिरुचि यहीं से पैदा हुई, जिसकी शुरूआत उन्होंने मिट्टी और मृण्मूर्तियों से की। स्कूल ऑफ़ आर्ट में प्रवेश के साथ ही उनकी कला-यात्रा आरंभ हो गई। लेकिन जहाँ अपनी कलात्मक सृष्टि को बेचने की बात थी, वे काफ़ी भोले या सरल विचार के थे। प्रसिद्ध चित्रकार जामिनी रॉय ने उन्हें अपने संरक्षण में लिया। सान्याल का मानना है कि कला की सृष्टि भावनात्मक, सौंदर्यपरक विभिन्न स्तरों पर हासिल अनुभवों का क्रिस्टलीकरण है। वे किसी चित्र को शीर्षक देना नापसंद करते हैं। चित्र स्वतः स्पष्ट होना चाहिए और उसके लिए किसी शीर्षक की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए। सान्याल बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं, जो संगीत में भी रुचि रखते हैं। किसी ज़माने में वे बाँसुरी बजाया करते थे और उसे बाँस से स्वयं तैयार करते थे।

शांति को तलाशती कलाकार **"एलिज़ाबेथ ब्रूनर" -** सामान्य अनुभव से परे कुछ अनोखा पाने की अपनी खोज में निरंतर डूबी रहीं। जुलाई 1910 को बुड़ापेस्ट में जन्म लेने वाली एलिज़बेथ ने वहीं पर अपनी औपचारिक शिक्षा संपन्न की और कला अकादमी में प्रशिक्षण ग्रहण किया। वे अपनी माँ के साथ भारत आकर बस गईं, जिनके साथ उनका गहरा संबंध था, एक ऐसा संबंध जो सार्थक, आलंकारिक मायने में रचनात्मक और प्रेरणाप्रद था। वे भारत की विविधता से मोहित थीं। एलिज़बेथ ने अपने कैनवस पर इन विविधताओं को संजोया है। उन्होंने शांति के धाम, शांति निकेतन में समय बिताया। न केवल महान कलाकार-कवि रवींद्रनाथ ठाकुर की उपस्थिति उनके लिए प्रेरणा का स्रोत थी, बल्कि वहाँ के आकर्षक बग़ीचे, रंगों और छाया की विविधता और सौहार्दपूर्ण वातावरण का विशेष उदात्त सौंदर्य की मौजूदगी, एलिज़बेथ की बेचैन आत्मा को प्रभावित किए बिना नहीं रह सकी। वे महात्मा गाँधी का चित्र बनाने के लिए काफ़ी उत्सुक थीं, जिन्होंने उससे मज़ाक में पूछा था कि क्या वे अपनी 'आत्मा' रंगना चाहती हैं। उनके द्वारा बनाए गए महात्मा गाँधी के चित्र के चारों ओर प्रभामंडल देखा जा सकता है। उन्होंने अपने कैनवस पर भव्य भारतीय परिदृश्य को समेटा। एलिज़बेथ और उनकी माँ पहाड़ों से आकर्षित थीं और अंततः वे पहाड़ियों के बीच जा बसीं।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 45

****

ग्रेट मास्टर्स सीरीज - जोहरा उनमास्क
(भाग प्रथम और द्वितीय)

निर्देशक : जय चंदीराम
अवधि : 54 मिनट 14 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

डॉ. कपिला वात्स्यायन ने महान नृत्यांगना, अभिनेत्री और रंगमंच कलाकार ज़ोहरा की शख्सियत को अनावृत किया है। नवाबों के कुलीन परिवार से संबंधित, उनके लिए नर्तकी बनने का आग्रह अत्यंत असामान्य था। वे जर्मनी गईं और नृत्य में 3 वर्षीय डिप्लोमा हासिल किया। अपने प्रदर्शन में समुचित मुद्राओं के उपयोग और भावनाओं को जोड़ते हुए, वह उनके लिए शारीरिक चेतना की अभिव्यक्ति का प्रशिक्षण था। अपनी वापसी पर, वे उदयशंकर के नृत्य केंद्र में शामिल हो गईं। ज़ोहरा कहती हैं कि उदयशंकर ने अच्छे प्रदर्शन के लिए शरीर की आत्म-चेतना और आत्म-प्रेरणा पर विशेष बल दिया। बहरहाल, केंद्र के बंद हो जाने पर, लाहौर में कुछ वक़्त बिताने के बाद वे मुंबई चली आईं। यहाँ पर वे महान रंगकर्मी पृथ्वीराज कपूर के थियेटर ग्रूप में शामिल हो गई। पृथ्वीराज कपूर के साथ उन्होंने पंद्रह वर्षों तक काम किया और उनके साथ फ़िल्मों में भी अभिनय किया। उन्होंने अपने जीवन के इस चरण की यादों को जतन से संजो रखा है। अपने पति की मृत्यु के बाद वे लंदन चली गई। लंदन में बिताए दस वर्ष काफ़ी मुश्किल, परेशानियों से भरे और उनका जीवन संघर्षपूर्ण रहा था। पर एक टी.वी. शो से हालात बदले, जो उनके लिए आर्थिक रूप से मददगार साबित हुआ। लेकिन वे स्वदेश लौटना चाहती थी, और यह लालसा इतनी दृढ़ थी कि वे मुंबई लौट आईं। हालाँकि वे नारीवादी नहीं है, लेकिन उनका मानना है कि महिला कई भूमिकाएँ निभा सकती हैं और उसे इसका श्रेय दिया जाना चाहिए। मौत के बारे में सवाल करने पर, वे बिंदास होकर जवाब देती हैं कि उन्हें उसकी प्रतीक्षा है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 46

****

ग्रेट मास्टर्स सीरीज - डॉ. के. एस. कारनाथ

निर्देशक : जय चंदीराम
अवधि : 31 मिनट 11 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

लेखक, संगीतज्ञ, यक्षगान विशेषज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ता और बाल नाटकों के रचयिता जैसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी डॉ. के.एस. कारंत के जीवन और रचनाओं पर एक नज़र डालें। जब स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उन्होंने वयस्कों की दुनिया में अपनी यात्रा शुरू की, तब वे महात्मा गाँधी से अत्यंत प्रभावित थे, और उन्होंने चरखे पर बहुत काम तथा खादी को लोकप्रिय बनाने के लिए विशेष प्रयास किए। यक्षगान के प्रति वे आकर्षित हुए और नाट्य तथा संगीत को समझने का प्रयास किया। उन्होंने उसमें सुधार लाने की कोशिश की। उनमें नए तत्वों का अन्वेषण किया। वस्तुतः यक्षगान में नाटक के प्रति आग्रह है, लेकिन आदर्श काल्पनिक है, और संगीत गीत के साथ जुड़ा रहता है, जो भावनाओं को दर्शाता है। इसकी भाषा भावनात्मक होनी चाहिए, लेकिन शारीरिक हाव-भाव मूर्तिकला में प्रदर्शित हाव-भावों के अनुरूप होने चाहिए। यक्षगान संभाव्य रूप से पुरुष व महिलाओं द्वारा जीवन पथ तय करने का प्रतीकात्मक रूपक है।

डॉ. कारंत के साथ बातचीत करते हुए डॉ. कपिला वात्यायन उनसे पूछती हैं कि उनका त्रासदी के प्रति ज़्यादा झुकाव क्यों है। प्रत्युत्तर में वे कहते हैं कि हमें इस तथ्य के प्रति जागरूक रहना चाहिए कि हमारा अस्तित्व क्षणभंगुर है, और उसके बारे में जागरूक न रहने का मतलब है, अपने आप को न समझना।

वे अफ़सोस जताते हैं कि भगवान को भी मिलावटी बना दिया है। जीने के लिए चालाक़ी की ज़रूरत है। हमने स्वर्ण का मूल्य समझा है, लेकिन हमारे लिए ज़रूरी है अपनी परंपरा का मूल्य समझना।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 47

****

ग्रेट मास्टर्स सीरीज - श्रीमती सितारा देवी और श्रीमती दमयंती जोशी

निर्देशक : जय चंदीराम
अवधि : 1 घंटा 2 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

सितारा देवी
(कथक प्रतिपादक)

पवित्र गंगा नदी के किनारे बसे पावन शहर वारणासी में जन्मी सितारा देवी बनारस घराने के कत्थक कलाकारों की दूसरी पीढ़ी से हैं, जिन्हें उनके पिता सुखदेव महाराज ने नृत्य की शिक्षा दी। डॉ. कपिला वात्स्यायन के साथ बातचीत करते हुए वे कहती हैं कि लड़की होकर कत्थक नृत्यांगना बनना एक अनोखी बात थी, क्योंकि वह ज़माना अलग था और उन दिनों रामलीला में भी केवल लड़के महिलाओं की भूमिकाएँ निभाते थे। 13 साल की उम्र में वे मुंबई आ गई, जहाँ बिल्कुल अलग माहौल था। उन्होंने यहीं पर तालीम - यानी शिक्षा ग्रहण की और नृत्य की शुरूआत की। उन्हें फ़िल्मों में कुछ भूमिकाएँ मिलने लगीं और 14-15 साल की उम्र में वे हीरोइन बन गईं। उन्होंने कत्थक शैली में निरूपित कई पौराणिक कथाओं में अभिनय किया। उन्होंने शंभु महाराज से नृत्य सीखा।

सितारा देवी का मानना है कि आज बैले नृत्य-शैली में अत्यधिक स्वतंत्रता है और वह 'विद्या' – ज्ञान ग़ायब हो चुका है। तालीम के लिए सीखने की ललक ज़रूरी है। लेकिन आज सवाल यह है कि - क्या घरानाओं की परंपरा जारी रहेगी? वे कहती हैं कि यह विशाल समुद्र है, जहाँ किनारा नज़र नहीं आता। समुद्र में डूब जाते हैं। यह शिव तांडव या शिव के ब्रह्मांडीय नृत्य समान अंतहीन है। वे अपने पिता पर एक क़िताब लिख रही हैं। उन्होंने शब्दों में संगीत-सह-नृत्य की रचना की थी - जिसे वे कविता कह कर संबोधित करती हैं; जिसे पुस्तक में सम्मिलित किया जाएगा। अभ्यास का अंश भी इसमें शामिल होगा। वे बताती हैं कि उनके पिता नेत्रों से विभिन्न हाव-भाव प्रकट करने और किसी भी विषय की अभिव्यक्ति के लिए शरीर के सभी अंगों का उपयोग करने में सिद्धहस्त थे।

दमयंती जोशी
(कथक प्रतिपादक)

भारतविद् और कला आलोचक डॉ. कपिला वात्स्यायन का महान कत्थक नृत्यांगना के साथ जीवंत संवाद, जिसमें उनके बेहतरीन अनुभव और कला-यात्रा के विभिन्न मोड़ उजागर होते हैं। पिता की अकाल मृत्यु के बाद, माता के लालन-पालन में दमयंती जोशी ने अपना बचपन कत्थक को समर्पित किया। जब उन्हें नृत्य की शिक्षा ग्रहण करने के लिए गुरू या श्रद्धेय शिक्षक के पास भेजा गया, तो उन्होंने टिप्पणी की कि दमयंती में महान कत्थक नृत्यांगना बनने के लिए समुचित प्रतिभा है। उनकी माँ चाहती थी कि दमयंती गुरुओं से नृत्य कला की 'तालिम' - सैद्धांतिक ज्ञान हासिल करें। उन्होंने ऐसे सत्रों में भाग लिया और उन्हें स्वयं अभ्यास या 'रियाज़' करना पड़ा। वे कहती हैं कि विभिन्न घराने - संगीतकारों के शिक्षालय या संप्रदाय, जिनकी अपने स्वयं की शैली होती है - 'घराने' से बाहर के लोगों को रियाज़ के राज़ नहीं बताते। उन्होंने कहा कि उन्हें बाहर रह कर ही सीखना पड़ा। दमयंती जी कहती हैं कि कत्थक को किसी व्याख्या की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि इसे आसानी से समझा जा सकता है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 48

****

ग्रेट मास्टर्स सीरीज - श्री भीष्म साहनी और प्रो. महेश मिश्रा

निर्देशक :
अवधि : 54 मिनट 51सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

श्री भीष्म साहनी: महान लेखक, रंगकर्मी, सामाजिक कार्यकर्ता भीष्म साहनी, डॉ. कपिला वात्स्यायन के साथ कुछ संस्मरण साझा कर रहे हैं। 20वीं सदी का आरंभिक काल सुधारवादी आंदोलनों के साथ-साथ, देश की आज़ादी के लिए राष्ट्रीय आंदोलन से अंकित है। भगतसिंह जैसे लोगों के नेतृत्व में कई क्रांतियाँ हुईं। भगतसिंह की फाँसी ने देशभक्ति को बढ़ावा दिया। सवाल हिंसा के सही या ग़लत होने का नहीं था। साहनी जी के विचार में आज हमारा ध्यान सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याओं से हट रहा है। साहनी कहते हैं, किशोरावस्था के दौरान, विचारधारा का एक विशिष्ट अर्थ था और अपने लक्ष्य और उद्देश्य से विश्वास जुड़ा था। आज, व्यक्तिगत स्तर पर प्रतिबद्धताएँ हैं, लेकिन सामाजिक स्तर पर भौतिकतावादी मूल्य ही रह गए हैं। हमारी सांस्कृतिक विरासत-संस्कृति-अब महत्वपूर्ण नहीं रही है। लेकिन साहनी जी मानते हैं कि हमारा देश आगे बढ़ने का मार्ग खोज निकालेगा।

प्रोफ़ेसर महेश मिश्रा: राष्ट्र की सेवा में अपना जीवन समर्पित करने वाले महान गाँधीवादी और स्वतंत्रता सेनानी प्रोफ़ेसर महेश मिश्र, श्री राजीव मालवीय के साथ अपने कुछ अनुभव और दृष्टिकोण साझा कर रहे हैं। बानबे (92) वर्षीय महेश मिश्र गाँधीवादी शिक्षा में दृढ़ विश्वास रखते हैं। वे कई बार जेल भी गए, लेकिन स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रहने के बावजूद, आज़ादी के बाद कभी किसी आकर्षक पद की उनमें आकांक्षा नहीं थी। उन्हें बस यही अफ़सोस है कि अन्य प्राथमिकताओं के कारण गाँधीवादी मार्ग पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। वे आंदोलन, देश-विभाजन और विभाजन के बाद की राजनीति की चर्चा करते हैं। स्पष्ट और सुबोध तरीक़े से अपने विचारों को सामने रखने की उनकी शैली काफ़ी प्रभावशाली है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 49

****

त्रिपुरा की विविध जनजातीय संस्कृति
(रियांग और त्रिपुरा की अन्य जनजातियां)

निर्देशक : मधुमती नाग
अवधि : 51 मिनट 42 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

रियांग, चकमा, जमतिया और अन्य जनजातियों को प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन बिताते हुए देखना, अत्यंत सुखद अनुभव है, जो सरल, अपरिष्कृत और आधुनिक जीवन की बिना किसी विकृतियों वाली उनकी जीवन-शैली को प्रतिबिंबित करता है। चाहे वह रियांग का होजगिरी नृत्य हो, या जमतिया का झूम नृत्य, ममिता नृत्य हो या लेबगांग भूमानी नृत्य, उनका प्रदर्शन उत्तम गुणवत्ता से युक्त होता है, जहाँ पार्श्व में बजता संगीत न केवल नर्तकों की लयबद्ध गति को सूचित करता है, बल्कि उनके दैनंदिन जीवन तथा प्रकृति के साथ घनिष्ठता के साथ प्रासंगिकता को प्रकट करता है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 50

****

सिक्किम में बौद्ध धर्म - तृतीय प्रकरण (एपिसोड)

निर्देशक : सुमित बनर्जी
संकल्पना और दृश्य : सव्यासाची जैन
अवधि : 1 घंटा 29:22 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

तीन भागों में फ़िल्म आपको गौतम बुद्ध के आकर्षक और प्रेरक जीवन, उनकी शिक्षाएँ, बौद्ध धर्म की प्रथाएँ, दो संप्रदाय – थेरवाद और महायान का उद्भव और 15वीं-16वीं सदी में तिब्बत के ज़रिए बौद्ध धर्म का सिक्किम में प्रवेश की यात्रा पर ले चलती है। अंतिम लक्ष्य बुद्धत्व – निर्वाण से परे के चरण पर पहुँचना है और इस तक छह 'परमित' – या अतींद्रिय और ज्ञान के मार्ग से पहुँच सकते हैं। मठवासी बनना सरल नहीं है, उन्हें मठ में नौ महीनों के कठिन प्रशिक्षण से गुज़रना होगा। मठ सभी सुविधाओं सहित, अपने आप में परिपूर्ण जगत है। मठ कोई साधारण भवन नहीं, बल्कि यह निर्धारित डिज़ाइन, भित्ति चित्र और जटिल संरचनाओं से उत्कीर्ण स्थल है, जहाँ मणि चक्रों और तंगका चित्रों का अपना ही ख़ास महत्व है। देखें कि कैसे तिब्बती बौद्ध धर्म और संस्कृति सिक्किम की स्वदेशी प्रथाओं के साथ घुल-मिल गई हैं। लेपचा की ज़िंदगी पर एक नज़र डालें।

I. सिक्किम – महायान बौद्ध धर्म का एक भूदृश्य 31.00 मि.
II. सिक्किम में बौद्ध धर्म – मठों में जीवन। 30.00 मि.
III. सिक्किम में बौद्ध धर्म: पारंपरिक चिकित्सा, चित्रकारी और कलाकृतियाँ। 28 मि.

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 51

****

उत्तर-पूर्व भारत में राम कथा की लोक परंपरा

निर्देशक : बप्पा रे
संपादक : सुनील उचित्रा
अवधि : 30 मिनट
कैमरा : गौतम बारा

पूर्वोत्तर क्षेत्र में राम कथा के विभिन्न संस्कृति विशिष्ट प्रस्तुतिकरण मिलते हैं, जिसमें राम का चरित्र सदाचारी, न्यायसंगत और कुलीन वंशज के रूप में उभर कर सामने आता है। सांस्कृतिक और जातीय भिन्नताओं के बावजूद, पूर्वोत्तर की कई संस्कृतियों में राम की कथा को स्वीकार किया गया है, जहाँ अपने विशिष्ट सामाजिक और सांस्कृतिक विशिष्टताओं के अनुरूप उसे अपनाते हुए पुनर्लेखन किया गया है। ब्रह्मपुत्र घाटी में राम कथा, मध्यकालीन कामरूप के शंकरदेव तथा माधव कोंडोली द्वारा प्रस्तुत विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ है। रामायण कथा-वाचन और प्रवचनों के अलावा, उसे कीर्तन के रूप में अनूदित किया गया है, जो 'पाला गाँव' के नाम से लोकप्रिय है। ये कीर्तन बराक घाटी और त्रिपुरा के विष्णुप्रिय मणिपुरी समुदायों में प्रचलित हैं। त्रिपुरा के गाँवों में, रामायण की मौखिक परंपरा है जो लोकगीत का सरल, अपरिष्कृत स्वरूप है, जो राम पंचाली के नाम से लोकप्रिय है, जिसे गाकर सुनाया जाता है। अरुणाचल प्रदेश के ताई खम्पतिस में भी रामांग नामक रामायण कथा प्रचलित है, जो दक्षिण-पूर्वी एशिया के नाग संस्करण से प्रेरित है। करबियों के बीच भी छबिन अलुन में रामायण की मौखिक परंपरा प्रचलित है। केना लेह रामाते इसका मिज़ो संस्करण है। इसके अतिरिक्त, मेघालय में खासी, जयंतिया और गारो भाषाओं में रामायण के महत्वपूर्ण अनुवाद उपलब्ध हैं। हमारी फ़िल्म एक ऐसा सफ़र है, जिसमें पूर्वोत्तर के विभिन्न भागों में अलग-अलग प्रकार से प्रदर्शित रामायण को समेटने का प्रयास किया गया है, जिसमें हम कहानी सुनाने की समृद्ध मौखिक परंपरा की झलक देख सकते हैं।

यह फ़िल्म 90 मिनटों की मूल फ़िल्म का लघु संस्करण है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 52

****

कश्मीर के नाविक

निर्देशक : आयश आरिफ
अवधि : 1 घंटा 19 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

पौराणिक, अतिप्राचीन झील सतियार से विकसित होने वाला कश्मीर, अब भी जल निकायों, तालाबों, नदियों, झरनों आदि से भरा क्षेत्र है। यदि उसे 'जल सभ्यता' कहा जाता है, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं। जल-निकायों से संबंधित व्यवसायों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े समुदाय हीन्ज़ कहलाते हैं। वे ठेठ जातीय विशेषताओं से युक्त हैं और स्वयं को पैगंबर नूह के वंशज मानते हैं। इस समुदाय के भीतर, उनके विशिष्ट व्यवसायों के आधार पर विभाजन है, i) डेम्ब-हीन्ज़ – सब्ज़ियाँ उगाते और उन्हें बेचते हैं, ii) गीर-हीन्ज़ – जलीय चेस्टनट संग्रहीत करते हैं iii) गाडी-हीन्ज़ मछुआरे हैं – जो मछली पकड़ते हैं और उनका व्यापार करते हैं, iv) कर-नाव-हीन्ज़ – ये विशेष प्रकार की बेंत की लकड़ी का पेड़ उगाते हैं, और उसे टोकरियाँ आदि बनाने के उपयोग में लाते हैं, और v) माता हीन्ज़ – इमारती लकड़ी का व्यापार करते हैं।

इसलिए आश्चर्य नहीं कि कश्मीरियों ने देवदार की लकड़ी से नाव बनाने की कला में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। विभिन्न प्रकार के नाव प्रचलित हैं:

I. डूँगा – बसेरा, जो हर पहलू से सक्षम है।
II. बहस्थ – चपटे तल वाली बड़ी नाव, जिसका इमारती लकड़ी जैसे भारी सामान ले जाने के लिए उपयोग किया जाता है।
III. शिकारा–आरामदायक नाव, जिसका नदी पार करने या झील की सैर करने के लिए उपयोग किया जाता है।
IV. खोच – छत रहित नाव जिसका तरकारी और फूल ले जाने के लिए उपयोग किया जाता है।
V. डेम्बी नाव – छोटी नाव जिसका दलदल में सफ़र के लिए उपयोग किया जाता है।
VI. हाउसबोट – अपनी शोभा, विशालता और आराम के लिए विख्यात – एक पर्यटक आकर्षण है। यह कश्मीर की संस्कृति का 'प्रतीक' है, चूँकि यह अपनी नक्काशियों, 'ख़तुमबंद' छत, अखरोट की लकड़ी के फ़र्नीचर, काग़ज़ की लुगदी से बनी वस्तुओं आदि सहित कश्मीर की संस्कृति की झलक प्रस्तुत करता है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 53

****

केसर कथा

निर्देशक : इफ्फत फातिमा
अवधि : 74 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

केसर कथा प्राचीन तिब्बती महाकाव्य है जो मंगोलिया, मध्य एशिया और चीन तक विस्तृत होते हुए समस्त तिब्बती प्रदेश में सुनाई जाती है। केसर कथा का लद्दाक़ी संस्करण, सदियों से मौखिक रूप में विद्यमान है, जिसे कथा-वाचक ठंडी, सर्दियों की रातों के दौरान सुनाता है। कहानी अलौकिक शक्तियों वाले मानव नायक केसर के कारनामों के इर्द-गिर्द बुनी गई है, जो संसार में शांति और व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास करता है। फ़िल्म में कई कथा सुनाने वालों की मधुर आवाज़ में कहानी को समेटने की चेष्टा की गई है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 54

****

किस्सा - पंजाब की एक परंपरा

निर्देशक: गुलशन वली
अवधि : 59 मिनट 58 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

पंजाबियों के जीवन और संस्कृति तथा उनके साहित्य के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए इस वृत्त चित्र को देखें। क़िस्सा – जिसे प्रेम गाथा या फ़ारसी में मसनवी कहा जा सकता है, प्रेम, वीरता, विश्वासघात, जुनून, साहसिक कारनामों आदि की दुखद कहानी है, जो कि पंजाबी साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है। यह साहित्यिक शैली, मध्ययुगीन काल से प्रचलित है, और पंजाब में अत्यंत लोकप्रिय रही है। हीर-राँझा, सोहनी-महीवाल जैसे मुख्य क़िस्सों के संदर्भ सहित, हाशिम शाह लिखित "ससी–पुन्नू" की संक्षिप्त प्रस्तुति भी देखें।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 55

****

पहाड़ी

(झारखंड के वनवासी)

निर्देशक : संगीता दत्ता

अवधि : 59 मिनट 58 सेकंड

इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

एक समुदाय जो क्षेत्र के प्रारंभिक निवासी होने का दावा करती है और जिसका उल्लेख न केवल मेगस्थनीज़ की पुस्तक में, बल्कि ह्वेन-त्सांग के यात्रा-वृत्तांत में भी मिलता है, अब समाप्ति के कगार पर धकेल दी गई है और एक पारिस्थितिकी और जैविक रूप से लुप्तप्राय जनजाति है। वे शिकार करने जाते हैं, फसल साझा करने की प्रथा का पालन करते हैं और साथ ही, बंटाई पर खेती करते हैं, मिट्टी से बने घरों में रहते हैं, जंगल से लकड़ी बटोरते हैं और जड़ी-बूटियों से चिकित्सा करते हैं। हालाँकि ग़रीबी, पिछड़ापन और शिक्षा के अभाव की वजह से वे आधुनिकीकरण से वंचित हैं, वे अत्यंत उत्साह और आनंद तथा जोशिले नाच-गान के साथ माघ पर्व मनाते हैं।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.

परिग्रहण सं. 56

****

वाराणसी के घाट पर देवी समारोह

निर्देशक : वी. एन. रैना
अवधि : 53 मिनट 57 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

वारणासी – हिन्दुओं द्वारा अत्यंत पावन मानी गई गंगा नदी के किनारे स्थित पवित्र नगरी – ज्ञान का शहर, भगवान शिव का शहर और ऐसा नगर है जहाँ जीवन और मृत्यु दोनों का उत्सव मनाया जाता है। वृत्त चित्र में कभी धारा न बदलने वाली और देवी मान कर पूजी जाने वाली गंगा नदी के घाट पर विश्वास के आविर्भाव के शानदार दृश्यों की प्रस्तुति की गई है। कुछ धार्मिक रीति-रिवाज विसंगत या तर्कहीन लगने के बावजूद, इसके प्रति लोगों का विश्वास ही है, जो उसे जीवित रखता है और उन्हें एक अर्थ देता है।

आश्चर्यचकित करने वाला अंश महिलाओं द्वारा काले पत्थर सालिग्राम और तुलसी के पौधे के विवाह का महोत्सव हो सकता है। सालिग्राम भगवान विष्णु का प्रतिनिधित्व करता है और तुलसी का पवित्र पौधा, महान भक्त वृंदा का प्रतीक है, जिसने अपनी धर्मपरायणता और ध्यान-मग्नता के कारण आध्यात्मिक शक्ति अर्जित की थी। भगवान विष्णु ने आदेश दिया था कि उसकी पूजा तुलसी के रूप में की जाए और प्रत्येक वर्ष सालिग्राम के साथ उसका प्रतीकात्मक रूप से विवाह संपन्न किया जाता है।

पावन गंगा में स्नान करें और आपके सभी पाप धुल जाएँगे। यदि आप जीवन में सफल होना चाहते हैं, तो अपने वचन की पूर्ति के लिए जीवन के अंतिम पाँच दिन बाणों की शैय्या पर लेटे, महाभारत के महायोद्धा भीष्म पितामह की याद में – भीष्म पंचक - पाँच दिन के लिए पूजा करें। गौतम बुद्ध, गुरु नानक, आदि शंकराचार्य, कबीर, तुलसीदास, रैदास जैसे सभी महापुरुषों और महान संतों ने इस स्थान की यात्रा की है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 57

****

टरनिंग ऑफ टाइड
(केरल के मछुआरे और नाविक)

निर्देशक : एस. विजय कुमार
अवधि : 58 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

इ.गाँ.रा.क.के. ने प्रायद्वीप भारत के उन पारंपरिक लोगों की जीवन-शैली के महत्वपूर्ण, दृश्य-श्रव्यात्मक दस्तावेज़ीकरण का जिम्मा उठाया है, जिनका मुख्य व्यवसाय मछली पकड़ना है। केरल – "देवताओं की नगरी में नाविक संस्कृति की महान विरासत विद्यमान है"।

केरल के नाविक मुख्यतः कोच्चि से कोल्लम तक के क्षेत्र में पाए जाते हैं। विभिन्न प्रकार की मछलियों को पकड़ने के लिए तिटुवालम, कटुवम जैसे नाव, हाउसबोट और कई तरह के जाल उपयोग में लाए जाते हैं। बुज़ुर्गों द्वारा समुद्री दशा और संभावित "मछली पकड़े जाने" की भविष्यवाणी मौखिक रूप से की जाती है।

ओणम केरल के महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। केरल के नाविक इस त्योहार को लोकप्रिय "सर्पिल नौका" दौड़ के रूप में मनाते हैं। यह एक साहसिक दौड़ है, जिसे देखने के लिए विश्व भर से भारी संख्या में पर्यटक यहाँ आते हैं। इस वृत्त चित्र में उनके रीति-रिवाज, समारोह, धार्मिक संदर्भ, लोककथा, गीत और सांस्कृतिक प्रतिक्रियाओं के माध्यम से उनकी जीवन-शैली के कुछ अंशों पर प्रकाश डाला गया है।

हालाँकि आधुनिक नाव और ट्रॉलरों ने पारंपरिक नावों की जगह ले ली है, चप्पू वाली नौकाओं को डीज़ल इंजनों ने प्रतिस्थापित किया है, लेकिन इन नाविकों की कड़ी मेहनत, समर्पण और अशांत लहरों के साथ संघर्ष अभी भी जारी है...

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 58

****

टरनिंग ऑफ टाइड

(आंध्र प्रदेश के मत्स्य पालन समुदाय)

निर्देशक: एस. विजय गोपाल
अवधि: 53 मिनट 11 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रकाशित

भारत प्रायद्वीप में नाविकों तथा मछुआरा समुदाय के मानचित्रण के दौरान आंध्र प्रदेश का तटीय क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आंध्र प्रदेश के नाविक "नोलिया समुदाय" से जुड़े हैं, जो आगे "जालिया और खलासी" दो जातियों में उप-विभाजित है। फ़िल्म इस समुदाय की जीवन-शैली और संस्कृति को समझने के लिए उपयोगी जानकारी प्रदान करती है। वे सबसे श्रमसाध्य व्यवसायों में से एक से जुड़े हैं ताकि हमें समुद्री भोजन का स्रोत प्रदान कर सकें जिसके बदले उन्हें बहुत ही कम पारिश्रमिक मिलता है। इसके अलावा, फ़िल्म नाविकों के काम से संबंधित पहलुओं और इशुवशेल तथा कत्तुवालम नामक उनके पारंपरिक नावों के उपयोग की पद्धति को दर्शाता है। नोलिया समुदाय 'अमोनीपट्टणम से नल्लूर' जिले तक विस्तृत है। वे अपने भगवान 'ग्राम देवी'की याद में वार्षिक उत्सव मनाते हैं।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 59

****

टरनिंग ऑफ टाइड
(तमिलनाडु के मछुआरे)

निर्देशक : एस. विजय गोपाल
अवधि- : 57 मिनट 24 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

भारत प्रायद्वीप के समानांतर बसे नाविक विशेष रूप से मछुआरा समुदाय द्वारा पहचाने जाते हैं, क्योंकि तटीय क्षेत्रों के समीप बसे लोगों की यह जीवन-रेखा है।

भारत प्रायद्वीप के नाविकों और मछुआरा समुदाय के मानचित्रण के दौरान तमिलनाडु तटीय क्षेत्र विशेष महत्व रखता है।

तमिलनाडु के नाविक मुख्यतः तटीय क्षेत्रों में बसे हैं जिसकी वजह से उनके पास समुद्र के बारे में ज्ञान प्रचुर मात्रा में है। तमिलनाडु के नाविक प्रमुख रूप से दो मौसमों में मछली का शिकार करते हैं - "वडई मौसम" (सितंबर-फरवरी) और "कोडई– कत्रु मौसम" (मार्च-अगस्त)। हवा और मौसमी संचलन के अच्छे ज्ञान की वजह से ये मछुआरे विश्वस्त रूप से विशिष्ट मछलियों की प्रजातियों को पकड़ते हैं, जो विभिन्न हवा के पैटर्न से जुड़े हैं। इसके अतिरिक्त, वे केवल बादलों के रंग, तारों के आकार और लहरों के पैटर्न को देख कर ही समुद्री लहरों का पूर्वानुमान लगाने में सक्षम हैं। वृत्तचित्र में उनके धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भ, अनुष्ठान आदि के माध्यम से नाविकों की जीवन-शैली पर प्रकाश डाला गया है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 60

****

गुजरात से - मुंगेला

निर्देशक : विष्णु देव हलदर
अवधि : 56 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रकाशित

गुजरात के नाविक "मुंगेला" कहलाते हैं और वे इस राज्य के मछुआरा समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं। फ़िल्म में वलसाडजिले में स्थित "सुरवाडा ग्राम" से लेकर महाराष्ट्र के ग्रेटरबॉम्बे तक विस्तृत इलाक़े को आवृत किया गया है। यहाँ के निवासियों को धीवर या तांडेल नाम से भी जाना जाता है। वे मूलतः गुजरात के निवासी थे लेकिन महाराष्ट्र के पड़ोसी ठाणेजिले से आकर यहाँ बस गए।

फ़िल्म में समुदाय की जीवन-शैली – उनकी संस्कृति, रीति-रिवाज, दैनंदिन गतिविधियाँ और शैक्षणिक स्तर का अध्ययन किया गया है। फ़िल्म से ज़ाहिर होता है कि मछली पकड़ने का पेशा दरअसल ऊँची जाति के समुदाय से जुड़ा है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 61

****

भारत के नाविक - महाराष्ट्र से कोली

निर्देशक : विष्णु देव हलदर
अवधि : 56 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

भारत प्रायद्वीप के नाविक विशेष रूप से मछुआरा समुदाय से पहचाने जाते हैं क्योंकि तटीय प्रदेशों में बसे लोगों की यही जीवन-रेखा है। महाराष्ट्र के तटीय क्षेत्र, बहु-विषयक दृष्टिकोण से विषय के अध्ययन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा बने हुए हैं।

महाराष्ट्र के नाविक कोली समुदाय से जुड़े हैं जो पर्याप्त संख्या में तटीय आबादी का हिस्सा बने हैं। प्रदेश के अन्य समुदाय कोली, कोलीस, वायतीकोलीस, महादेव कोली, सूर्यवंशी कोली और मंगेला नाम से जाने जाते हैं। कोली समुदाय मुख्य रूप से मुंबई के सात द्वीपों में फैला हुआ है और वेकोलीवाड़ा के रूप में विख्यात हैं। कोली बहुत ही धार्मिक लोग हैं। वे महादेव, हनुमान और अपने ग्रामदेवता गोल्पा देवी, हरवा देवी और सर्वा देवी की पूजा करते हैं।

वृत्तचित्र में उनके व्यावसायिक और कार्यकारी पहलुओं और उनके धार्मिक अनुष्ठान, समारोह, धार्मिक संदर्भ, लोककथाओं, लोकगीत और सांस्कृतिक प्रतिक्रियाओं के माध्यम से उनकी जीवन-शैली पर प्रकाश डाला गया है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 62

****

गोवा से - खर्वी

निर्देशक : नम्रता रॉव
अवधि : 57 मिनट 47 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

कई भारतीय राजाओं द्वारा शासित होने के बाद, गोआएशिया में पुर्तगाल का पहला क्षेत्रीय अधिग्रहण बना और 1961 में भारत सरकार का संघशासित प्रदेश बनने तक उन्हीं के कब्ज़े में रहा।

मछुआरा समुदाय "गोआ" की जीवन-रेखा है। वे पुर्तगालीय शासन के दौरान मछली पकड़ने के व्यवसाय से जुड़े थे और भारतीय गणतंत्र का हिस्सा बनने के बाद भी उन्होंने अपना व्यवसाय जारी रखा।

फ़िल्म में गोआ के इन मूल आदिवासियों की जड़ों को पहचानने का प्रयास किया गया है, जिन्होंने समुद्र और नदियों के पास अपने गाँवों का विकास किया। ये लोग **"खर्वी" (समुद्र के साहसी लोग)** कहलाते हैं और गोआ में खनन और पर्यटन के बाद मछली पकड़ने का उनका व्यवसाय तीसरे स्थान पर है।
फ़िल्म में उनके रीति-रिवाज, धार्मिक अनुष्ठान, संस्कृति के माध्यम से उनकी जीवन-शैली और मज़दूरों की समस्या पर प्रकाश डाला गया है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 63

राम्मन

गढ़वाल का धार्मिक थिएटर

निर्देशक : डॉ डी. आर. पुरोहित
अवधि- : 1 घंटा 24 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

राम्मन उत्तराखंड, भारत के चमोलीजिले की पैनखांडा घाटी में सालूरडुंग्रा ग्राम में प्रतिवर्ष आयोजित धार्मिक थिएटर के स्वरूप में प्रदर्शित धार्मिक त्योहार है। यह एक लुप्तप्राय स्वरूप है, जो ग्रामदेवता भूमियल के समक्ष भेंट स्वरूप प्रदर्शित किया जाता है।

राम्मन का प्रारंभ बैसाखी के बाद 9वें या 11वें दिन होता है। इस त्योहार में धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं, भगवान राम की स्थानीय गाथा का गायन होता है और दैनंदिन जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हुए मुखौटे लगा कर नृत्य किया जाता है। प्रदर्शन का एक और महत्वपूर्ण पहलू है जागर का गायन, जो स्थानीय किंवदंतियों का संगीतबद्ध गायन स्वरूप है। राम्मन समुदाय की ऐतिहासिक स्मृति के साथ जुड़ी हुई स्पष्ट कड़ी भी है।
इ.गाँ.रा.क.के. ने इस त्योहार को प्रलेखित और भारत सरकार को प्रस्तुत किया है तथा यूनेस्को ने राम्मन को मानवता की सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में धार्मिक त्योहार और गढ़वाल हिमालय के धार्मिक रंगमंच के रूप में अंकित किया है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 64

चक्रव्यूह

निर्देशक : डॉ डी. आर. पुरोहित
अवधि : 1 घंटा 46 मिनट
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

दीवाली के कुछ दिनों बाद उत्तराखंड के कुछ गाँवों में 'चक्रव्यूह' नाम से विख्यात 'पांडव लीला' का प्रदर्शन किया जाता है। कुछ ग्रामवासियों पर महाभारत के विभिन्न पात्र हावी हो जाते हैं और वे अनजाने में उन किरदारों को अभिनीत करने लगते हैं। चक्रव्यूह महाभारत की सुविख्यात घटना है, जिसमें सात कौरवों ने चक्रव्यूह की रचना द्वारा, अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की क्रूर हत्या कर दी थी। अपने लाड़ले बेटे की मृत्यु से शोकग्रस्त माता-पिता का यह प्रकरण, दर्शकों में करुणा भाव जगाता है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 65

मणिपुर -पूर्व का गहना

निर्देशक : सुजीत कुमार
अवधि : 1 घंटा 33सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

मणिपुर के रमणीय भू-भाग में "माइती" नामक समुदाय अधिकांश संख्या में बसा है। टोंगकुल नागा और 19 से भी ज़्यादा छोटी जनजातियाँ भी आबादी का हिस्सा हैं जो ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत से समृद्ध है। इस वृत्त चित्र में उनकी संस्कृति, धार्मिक अनुष्ठान, त्योहार और बहुत कुछ समेटने का प्रयास किया गया है।

मणिपुर के गौरवशाली अतीत का स्मरण कराता हुआ विश्व विख्यात किला "कांग्ला" यहाँ मौजूद है। इसके अतिरिक्त, "नूपीलाल" मूर्तियाँ, शहीद मीनार, आईएनए स्मारक (भारत का पहला स्थल जहाँ नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने भारतीय राष्ट्रीय सेना का झंडा फहराया था) भी देखे जा सकते हैं।

यदि राज्य का इतिहास समृद्ध है, तो संस्कृति भी उतनी ही आकर्षक है। कई लोग चर्च में शादी करना पसंद करते हैं। "ढोल-चोलोम" रासलीला देखने के आनंद ही कुछ और है। लोग विभिन्न खेलों के माध्यम से ज़िंदगी का मज़ा लूटते हैं। यहाँ पोलो"सगल कंजई" और नौका-दौड़ "केइंगतनाबा" कहलाती है।

हस्तकला से समृद्ध इस प्रदेश में, मिट्टी के बर्तन बनाने की कला, विशेष गुड़िये, हथकरघा आदि का विशेष उल्लेख आवश्यक है। साथ ही, मणिपुर में श्री विजय गोविंद, देवी "पंथवेबी", देवी "सारामाही" के प्रति लोग अत्यंत निष्ठा रखते हैं और वे 10 दिनों तक "जगन्नाथ रथयात्रा" का जश्न भी मनाते हैं।

हालाँकि आज उनकी राज्य की राजधानी इम्फ़ाल काफ़ी प्रगति कर चुकी है, तथापि छोटे गाँव और कस्बे अपने पारंपरिक मूल्य और जीवन-शैली को अब भी बनाए रखे हुए हैं।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 66

****

मेघालय की जनजातियां

निर्देशक : सुजीत, बी.बी. लहकर
अवधि : 58 मिनट 34 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

हरियाली, धूप, बारिश और सुंदर पहाड़ियों से घिरा मेघालय बहुत ही ख़ूबसूरत राज्य है। राज्य में कई जनजातियाँ बसी हुई हैं। गारो, खासी और जयंतिया तीन प्रकार की ऐसी जनजातियाँ हैं जिनका मेघालय में इतिहास, रीति-रिवाज, धार्मिक अनुष्ठान और संस्कृति बहुत ही गौरवशाली और अद्वितीय रही है। भौगोलिक रूप से वे क्रमशः गारोपहाड़ी, खासीपहाड़ी और जयंतियापहाड़ियों में बसे है, जिनके नाम यहाँ बसी जनजाति को स्पष्ट करता है। गारो जनजाति के अधिकांश लोगों ने ईसाई धर्म अपनाया, लेकिन अपने पारंपरिक रीति-रिवाज और संस्कृति को भी बनाए रखा है, जब कि खासी अपनी संस्कृति और पारंपरिक संचालन में विश्वास रखते हैं और जयंतिया जनजाति की अपनी अनुपम परंपरा है। इन जनजातियों में विवाह की प्रथा अलग है, जैसे कि गारो जनजाति में दूल्हे को शादी के बाद अपनी पत्नी के साथ जाकर रहना पड़ता है।

वृत्तचित्र में उनकी संस्कृति, रीति-रिवाज, परंपरा और धार्मिक अनुष्ठानों को समेटने का प्रयास किया गया है। वे मुख्यतः सुपारी की खेती करते हैं और यह प्रदेश, संपूर्ण भारत और बांग्लादेश में सुपारी का प्रमुख आपूर्तिकर्ता है। "वंगाला" मुख्य त्योहार है, जो फसल काटने के बाद मनाया जाता है।

राज्य की राजधानी शिल्लांग है, जो 'शैक्षणिक संस्थानों के केंद्र' के रूप में भी विख्यात है। हालाँकि आज समुदायों ने अपने पारंपरिक रीति-रिवाजों को नए और आधुनिक रीति-रिवाजों के अनुकूल ढाल लिया है, तथापि उनकी जीवन-शैली का ढर्रा उसी प्रकार का है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 67

****

कोनयाक और नागालैंड की विभिन्न जनजातियां

निर्देशक : सुजीत चक्रबर्ती
अवधि : 57 मिनट 52सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

भारत के सुदूर पूर्वोत्तर में बसा "नागालैंड" एक आकर्षक पहाड़ी राज्य है। यह पारंपरिक लोगों की अतुलनीय सांस्कृतिक विरासत से समृद्ध है।

फ़िल्म में मुख्यतः नागालैंड की विभिन्न जनजातियों का वर्णन है, जिनमें "कोनयाक" सबसे बड़ी जनजाति है और मुख्यतः राज्य के "मोन" जिले में पाई जाती है। सभी समुदाय अपनी जनजाति और सत्ता की विशिष्ट वेश-भूषा और गोदने का पालन करती हैं। गोदने के लिए **धूना वृक्ष** से एकत्रित कालिख का उपयोग किया जाता है, जब कि पारंपरिक कोनयाक पोशाक के लिए हाथी के दाँत, शृंगी के पंख और बंदर की खोपड़ी जैसे जंतुओं के भाग का उपयोग किया जाता है।

फ़िल्म में पूरे राज्य का पूर्वावलोकन एक ही मंच पर प्रदान करने के उद्देश्य से "नागालैंड का झरोखा" में दृश्य भी प्रदान किए गए हैं। इसमें राज्य के प्रत्येक समुदाय के घरों को प्रदर्शित किया गया है। वृत्तचित्र में उनकी जीवन-शैली, विश्वास-प्रणाली और जीवन पद्धति की विभिन्न बारीक़ियों को समग्र रूप से रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

फ़िल्म में प्रदर्शित उनके मुख्य पर्व एवोलियांग की झाँकियाँनागालैंडवासियों के पुराने वर्ष के समापन और नए वर्ष के प्रारंभ का द्योतक है।

फ़िल्म में दवा के रूप में जड़ीबूटियों की छवि ज्ञान प्रणाली की भी छान-बीन की गई है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 68

****

रियांग और त्रिपुरा की विभिन्न जनजातियां

निर्देशक : मधुमिता नाग
अवधि : 51 मिनट 10 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

त्रिपुरा– उत्तर-पूर्वी खंड का सबसे छोटा राज्य, जो अपने घने जंगलों और हरियाली के कारण हरे स्वर्ग के रूप में भी विख्यात है, बांग्लादेश के उत्तर में अवस्थित है। त्रिपुरा का इतिहास गौरवशाली और समृद्ध संस्कृति है, जो जनजातीय संस्कृति और बंगाल की संस्कृति का मिश्रण है। सभी 19 जनजातियों की संस्कृति, इतिहास, लोगों की जीवन-शैली, लोक-कथाएँ, ऐतिहासिक स्मारक और राज्य की किंवदंतियाँ समान रूप से समृद्ध है।

रियांग, चकमा, जमतिया और अन्य जनजातियों को प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन बिताते हुए देखना, अत्यंत सुखद अनुभव है, जो सरल, अपरिष्कृत और आधुनिक जीवन की बिना किसी विकृतियों वाली उनकी जीवन-शैली को प्रतिबिंबित करता है। चाहे वह रियांग का होजगिरी नृत्य हो, या जमतिया का झूम नृत्य, ममिता नृत्य हो या लेबगांगभूमानी नृत्य, उनका प्रदर्शन उत्तम गुणवत्ता से युक्त होता है, जहाँ पार्श्व में बजता संगीत न केवल नर्तकों की लयबद्ध गति को सूचित करता है, बल्कि उनके दैनंदिन जीवन तथा प्रकृति के साथ घनिष्ठता के साथ प्रासंगिकता को प्रकट करता है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 69

****

उत्तर-पूर्व समारोह - 2009 – मणिपुरसिक्किम
(11 जनवरी 2009 (संध्या प्रदर्शन)

अवधि :
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

सिक्किम प्रदेश कई आकर्षणों का केंद्र है; चाहे वह देवत्व, अध्यात्म, रहस्यवाद, उत्कृष्टता या अन्य किसी करिश्मे की बात ही क्यों न हो, यह राज्य हर मायने में उत्तम है।

इ.गाँ.रा.क.के. ने पूर्वोत्तर महोत्सव के ज़रिएसिक्किम के विभिन्न रंगों को समेटने का प्रयास किया है। सिक्किम में कई देसी जातियाँ और जनजातियों का अधिवास है और उनमें से प्रत्येक का अपना रोचक लोक-नृत्य है। सिक्किम के निवासियों को प्रमुख रूप से तीन समुदायों में क्रमशः लेपचा, भूटिया और नेपाली में विभाजित किया जा सकता है। लोक नृत्य और संगीत सिक्किम की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं। अधिकांश नृत्य प्राकृतिक परिवेश के अद्भुत सौंदर्य से जुड़े हैं। उनमें से कुछ फसल के मौसम को दर्शाते हैं, जब कि अन्य नृत्य प्राकृतिक संपन्नता को प्रदर्शित करते हैं। सिक्किम के पारंपरिक नृत्य उनके कई संगीत वाद्य-यंत्रों की धुन के साथ-साथ थिरकते हैं।

पर्व के मुख्य नृत्य हैं: **हिमपात सिंह नृत्य,** जो सिक्किम का प्रसिद्ध नृत्य है।
मारिनी नृत्य – मारोनीसिक्किम के नेपाली समुदाय का सबसे पुराना और लोकप्रिय नृत्य है।
तबंग नृत्य – तबंग प्रकृति प्रेमी हैं और अपनी कड़ी मेहनत के लिए विख्यात हैं। वे नेपाली समुदाय से जुड़े हैं। आम तौर पर यह नृत्य तबंगों के नव वर्ष समारोह में प्रदर्शित किया जाता है।

शेष प्रदर्शनों में शामिल हैं – **श्रुति नृत्य, कुसुरप्पा के साथ छबरिया नृत्य,, लेपचा वाद्य-यंत्र, दोहारी गीत, भोटिया नृत्य, यक नृत्य और लोक व शास्त्रीय मिश्रित संगीत।**

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 70

****

उत्तर-पूर्व समारोह - 2009 – मणिपुर
(12 जनवरी 2009 (संध्या प्रदर्शन)

अवधि :
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

सुंदर भू-भाग मणिपुर में अधिकांशतः "माइती" समुदाय के लोग बसे हैं। टोंगकुल नागा और 19 से अधिक छोटी जनजातियाँ यहाँ की आबादी का हिस्सा हैं, जिनकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत काफ़ी समृद्ध है। यदि राज्य का इतिहास संपन्न है, तो यहाँ की संस्कृति समान रूप से आकर्षक है।

पूर्वोत्तर पर्व मणिपुर दिवस को आवृत करता है जो कि पहाड़ी राज्य – मणिपुर को समर्पित है।

इ.गाँ.रा.क.के. ने मणिपुर के विविध रंगों को समेटा है। कुछ मुख्य कार्यक्रम हैं – लाई-हरोबा (लाई-हरोबामणिपुर के माइती लोगों का वार्षिक अनुष्ठान पर्व है जो अप्रैल/मई के महीने में आयोजित होता है और निरंतर 7/9/13 दिनों तक मनाया जाता है।), **"टोडामे-बी गगोई", मार्शल आर्ट (थांग-ठा), ठाडो (कुमकुमलाम, गोईसामलाम, टोइपी लाम और हलगाईलापलाम), काबोई-कोई-लाम, ता कावशुभा, ला-शा, मणिपुर का बसंत रासलीला।**

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 71

****

उत्तर-पूर्व समारोह - 2009 – मिजोरम
(13 जनवरी 2009 (संध्या प्रदर्शन)

अवधि :
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

मिज़ोरम (मिज़ो जन की भूमि) पूर्वोत्तर भारत के सात भगिनी राज्यों में से एक है, जिसकी सीमाएँत्रिपुरा, असम, मणिपुर और पड़ोसी देश बांग्लादेश और मियान्मार से जुड़ी हैं। यहाँ की प्रकृति, मौसम, संस्कृति, अनुष्ठान, रंग-बिरंगी पोशाकें और लोकगीत लोगों को मंत्रमुग्ध कर देती है।

मिज़ोरम दिवस के प्रमुख कार्यक्रम हैं –

सोलकिया नृत्य (युद्ध में विजय का जश्न मनाते हुए प्रदर्शित नृत्य। गीत गाए नहीं जाते, बल्कि ताल के लिए केवल घंटे और ढोल बजाए जाते हैं।)
कुक्कुट युद्ध (यह कुक्कुट युद्ध का अनुकरण है), **पासेल मरोड़ना** (इस खेल में दो लोग पासेल को दोनों हाथों से थामते हैं जिसे एक तिहाई एक दिशा में और शेष दूसरी दिशा में मोड़ने के लिए अत्यधिक शक्ति की ज़रूरत पड़ती है।) **छेहलाम नृत्य** (यह सामुदायिक नृत्य ख़ुशी की भावना और गति का प्रतीक है)। **बैलों की लड़ाई, क्वालाम्प** (अतिथि नृत्य), **मिज़ो कुश्ती, चीरो बाँस नृत्य** (यह मिज़ो का अत्यंत रंगीन और लयबद्ध नृत्य है। इसमें नर्तकों के प्रसन्नचित्त गति को प्रदर्शित किया जाता है, जिसमें हमारी सांस्कृतिक धरोहर का गहरा प्रतिबिम्ब झलकता है।) **खापसो खा** (यह गीत अक्तूबर के महीने में चाँदनी रात के सौंदर्य का वर्णन करता है। सूर्य पश्चिम में डूब जाता है और पूर्व दिशा में चंद्रमा का सुंदर आगमन होता है। चाँदनी प्रत्येक हृदय को आह्लादित करती है और लोग अपने चहेतों के साथ इस रात का आनंद लूटते हैं।)

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 72

****

उत्तर-पूर्व समारोह - 2009 – नागालैंड
(14 जनवरी 2009 (संध्या प्रदर्शन)

अवधि :
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

नागालैंड एक जीवंत पहाड़ी राज्य है जो भारत के सुदूर उत्तर पूर्व में स्थित है। यह पारंपरिक लोगों के समृद्ध अतुलनीय सांस्कृतिक विरासत को प्रस्तुत करता है। इसका विशिष्ट स्वरूप प्रत्येक जनजाति की परंपरा, रीति-रिवाज, भाषा और वेश-भूषा की पहचान कराता है। संबदधजनजातिय पर्व पूरे राज्य भर में विभिन्न अंतरालों में मनाये जाते हैं।

इ.गाँ.रा.क.के. ने नागालैंड के विभिन्न रंगों को आवृत किया है। जिनमें शामिल कुछ प्रमुख रंग हैं – **ताटिफ़्थ** ("ताटी" एक सरल वाद्य-यंत्र है जो बहुत ही आकर्षक और मधुर ध्वनि उत्पन्न करता है और जो कई प्रकार के लोकगीतों का संपूरक है। प्राचीन काल से "अंगामी" ने एकल और युगल लोकगीतों के पार्श्वसंगीत के लिए ताटी का उपयोग किया है। यह "ताटी" का प्रवाल प्रस्तुतिकरण है। **खट अखी योद्धा नृत्य** (यह नृत्य संभाव्यता के विविध रूपों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदर्शित किया जाता है) **नागालैंड से जातीय वेशभूषा प्रदर्शन, एओ जनजाति का शृंग नृत्य** ("एओ" दो महत्वपूर्ण त्योहार मनाते हैं –i) माउत्शुii) सुम्रिमौंग। माउत्शु त्योहार स्वस्थ फसल के लिए लिजोबा देवता का आशीर्वाद पाने के लिए उन्हें आह्वानित करते हुए मनाया जाता है, जब कि सुम्रिमौंग त्योहार भरपूर फसल के लिए मनाया जाता है।), **अंगामी जनजाति द्वारा थेकराकु त्योहार नृत्य, पोचुरी जनजाति द्वारा ओहतोवियोटोरी नृत्य** (प्राचीन काल में यह नृत्य सफल शिकार के बाद विजयी योद्धा की ग्राम वापसी पर प्रदर्शित किया जाता था) और **जोथ्सा-कजाफ़ा (नागा लोकगीत)**

नागालैंड के लोग आजीविका के मामले में स्वतंत्र हैं। महिलाएँ सूत कातती, धागा बनाती और कपड़े बुनती हैं, तथा बुनाई करते हुए मधुर गीत गाती हैं।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 73

****

उत्तर-पूर्व समारोह - 2009 – त्रिपुरा
(15 जनवरी 2009 (संध्या प्रदर्शन)

अवधि :
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

सामंती राज्य त्रिपुरा अपनी संस्कृति, परंपरा और सौंदर्य के लिए विख्याता है। राज्य में विभिन्न देसी जनजातियाँ और बांगोली, मणिपुरी आदि जैसे भिन्न समुदायों के लोग निवास करते हैं। राज्य में बसे सात जातीय समूहों के साथ त्रिपुरा मिश्रित संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। एक से दूसरे समुदाय के बीच

सांस्कृतिक विरासत भिन्न है। पूर्वोत्तर पर्व द्वारा आवृत्त राज्य के विभिन्न रंग हैं:
मोलसूम जनजाति द्वारा मोलसूम नृत्य, छकम समुदाय द्वारा धमैल नृत्य (यह बांगोली समुदाय के लोकप्रिय लोकनृत्यों में से एक है। बांगोलीमहिलाएँ विवाह समारोह में दुल्हन या दूल्हे के कल्याणमय जीवन की कामना में यह नृत्य प्रदर्शित करती हैं)।

चकमा समुदाय द्वारा बिज़ू नृत्य (बिज़ू चकमा समुदाय का अत्यंत महत्वपूर्ण नृत्य है। बांगोलीकैलेंडर वर्ष के अंतिम दिन से दो दिन पहले चकमा समुदाय द्वारा बिज़ू पर्व मनाया जाता है)।

रामायण : लोकनृत्य और लोकगीत, त्रिपुरी समुदाय द्वारा लेबंगबूमानीलोकनृत्य (यह त्रिपुरी समुदाय द्वारा एक आकर्षक नृत्य है। फसल उगाने से पहले लोग अच्छी फसल के लिए खेत में "लेबंग" नामक कीटों को मारते हैं)।

रियांग जनजाति द्वारा हजगिरीलोकनृत्य (यह रियांग समुदाय द्वारा एक लोकप्रिय पारंपरिक नृत्य है, जो अपनी अद्वितीय प्रणाली और अभिव्यक्ति के लिए अंतर्राष्ट्रीय रूप से प्रसिद्ध है)

बंगाली समुदाय द्वारा महिषासुरमर्दिनी लोक यात्रा (यह बंगाली समुदाय की लोकयात्राओं में से एक है और इसकी रचना हिन्दू पौराणिक कथा पर आधारित है। यह लोक रंगमंच का बहुत ही लोकप्रिय स्वरूप है जिसमें देवी दुर्गा द्वारा महिषासुर का वध प्रदर्शित किया जाता है)

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 74

****

उत्तर-पूर्व समारोह - 2009 – अरूणाचल प्रदेश
(16 जनवरी 2009 (संध्या प्रदर्शन)

अवधि
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

अरुणाचल प्रदेश यानी संस्कृत में सवेरे से प्रकाशित पहाड़ी भूमि। यह "सूर्योदय की भूमि" भी कहलाता है क्योंकि यह भारत के सबसे पूर्व में स्थित राज्य है। अरुणाचल के अधिकांश मूल निवासी या वहाँ बसे लोग तिब्बत-बर्मा मूल के हैं।

समारोह के प्रमुख कार्यक्रम थे:

पवित्र मंत्रोच्चारण (मंगल पाठ) (मंगलाचार्य द्वारा तबंग मठ मंत्रोच्चारण) **मंगल पाठ, मोनपा जनजाति द्वारा याक नृत्य** (याक नृत्य तबंग क्षेत्र में सुरागाय के परिचय का कथा-वर्णन है), **तागिन जनजाति द्वारा तागिन नृत्य** (तागिनमहिलाओं के सशक्तिकरण का प्रतिनिधित्व करने वाला तागिन समुदाय का लोकनृत्य)
इगु नृत्य (देबांग घाटी के इदुमिशीजनजातियों द्वारा ध्यान और अन्य धार्मिक अनुष्ठान प्रदर्शित करते समय इदु पुरोहितों द्वारा मंत्रोच्चारण और नृत्य)
खम्पाती जनजाति (नृत्य का नाम है का-शॉक। एक राजा द्वारा दूसरे राजा पर चढ़ाई करते समय प्रदर्शित सामान्य युद्ध नृत्य)
कोको-लोको नृत्य (यह मोनपा समुदाय का किसान नृत्य है। कोको लोको यानी सुबह मुर्गों की बाँग) माओलतागिनतोने, का-मुक्रहौ (यह लोहाटजिले के खम्पाती जनजाति का शिकारी नृत्य है। का-मुक्रहौ दर्शकों या मेहमानों के मनोरंजन के लिए थाई देशों के पारंपरिक लोकप्रिय नृत्य नाटिकाओं में से एक है।) पेन हाइम नृत्य, लोसर नृत्य (यह नृत्य लोसर पर्व के दौरान प्रदर्शित किया जाता है जो मोनपा समुदाय के नव वर्ष का आरंभ है)।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 75
****

उत्तर-पूर्व समारोह - 2009 - मेघालय
(17 जनवरी 2009 (संध्या प्रदर्शन)

अवधि :
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

मेघालय हरियाली से घिरा सुंदर राज्य है, जहाँ धूप, बारिश और ख़ूबसूरत पहाड़ियों का दृश्य काफ़ी आकर्षक है। यहाँ बड़े पैमाने में गारो, खासी और जयंतियाजनजातियाँ बसी हुई हैं, जिनका इतिहास, परंपराएँ, धार्मिक अनुष्ठान और संस्कृति शानदार और अनुपम रहा है।

इ.गाँ.रा.क.के. ने 2009 में पूर्वोत्तर समारोह का आयोजन किया था और मेघालय दिवस कार्यक्रमों का एक हिस्सा रहा, जिसे पहाड़ी राज्य मेघालय को समर्पित किया गया था।

इ.गाँ.रा.क.के. ने मेघालय के विविध रंगों को आवृत किया है जिनमें प्रमुख हैं:

वाद्य-संगीत प्रदर्शन, शाद मस्तगी: लोक नृत्य (शाद मस्तगीखासी लड़कों द्वारा प्रदर्शित धन्यवाद ज्ञापन नृत्य है। इसके माध्यम से अच्छी फसल के लिए भगवान को धन्यवाद ज्ञापित किया जाता है।), **जयंतिया जनजातियाँ** (हर साल नए वर्ष या ग्रीष्मकालीन पर्व के दौरान जयंतियापहाड़ियों के जनजातीय क्षेत्रों में सामाजिक सभाएँ आयोजित की जाती हैं जो बम अलहार के नाम से जाना जाता है। इस बम अलहार में युवा और साथ ही बुज़ुर्ग लोग, मौज मस्ती में शामिल होते हैं।) **वंगला नृत्य** (वंगलागारो जनजाति का मुख्य त्योहार है। इस पर्व पर प्रदर्शित किया जाने वाला नृत्य वंगला नृत्य कहलाता है।) **लाहुर नृत्य** (लाहुरजयंतिया जनजाति के पारंपरिक नृत्यों में से एक है। दरअसल इस नृत्य का मूल नाम छिपिया है। संभवतः लाहुर नाम उस गायक के नाम से उत्पन्न हुआ होगा जिसने हु-आहो नृत्य की धुन तैयार की थी। यह नृत्य ईश्वर के प्रेम और दया भाव के प्रति मानव द्वारा कृतज्ञता प्रदर्शन का प्रतीक माना जाता है। लाहुर नृत्य में एक महिला नर्तकी के साथ दो पुरुष नर्तक नृत्य करते हैं।) **शाद शुख नृत्य** (शाद शुखमेनसियाम अच्छी फसल के बाद ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए प्रदर्शित नृत्य है। इस नृत्य में केवल कुँवारीकन्याएँ पुरुष नर्तकों से घिरी हुई नाचती हैं।) **होको नृत्य** (होको नृत्य और गीत शिक्षकों का नृत्य है और काम-माता उत्सव या श्राद्ध उत्सव के दौरान प्रदर्शित किया जाता है। श्राद्ध उत्सव किसी सम्माननीय व्यक्ति के देहांत पर आयोजित होता है।), **शादनगारे नृत्य** (शादनगारे नृत्य फसल की कटाई के अवसर पर प्रदर्शित किया जाता है।) **शाद्थमा नृत्य** (आम तौर पर योद्धा नृत्य के रूप में विख्यात है, जिसमें योद्धा और उनके परिवार को युद्ध में भाग लेते हुए दिखाया जाता है।), **समुखी** (इस गीत का सार घासियों का यह मान्यता है कि आकाश में इंद्रधनुष का प्रकट होना यह संकेत है कि आगे बारिश नहीं होने वाली है यानी लोग अपने काम पर जा सकते हैं और बच्चे बाहर ख़ूबसूरत मौसम में खेलते हुए आनंद लूट सकते हैं।)

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 76

****

उत्तर-पूर्व समारोह - 2009 - असम
(16 जनवरी 2009 (संध्या प्रदर्शन)

अवधि :
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

असम भारत का उत्तर-पूर्वी राज्य है जो सात भगिनी राज्यों से घिरा है: (अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मिज़ोरम, त्रिपुरा और मेघालय)। यहाँ की हरियाली, संस्कृति, लोग, जलवायु, पक्षियों की विभिन्न प्रजातियाँ और तालाब उसे अन्य राज्यों से विशिष्ट बनाते हैं।

इ.गाँ.रा.क.के. ने 2009 में पूर्वोत्तर समारोह का आयोजन किया था और असम दिवस कार्यक्रमों का एक हिस्सा रहा, जिसे पहाड़ी राज्य असम को समर्पित किया गया था।

इ.गाँ.रा.क.के. ने असम के विविध रंगों को आवृत किया है जिनमें प्रमुख हैं:

लोक गीत, अघासुर हद (पारंपरिक नाटकों में ओंकिया भाना एक और खज़ाना है। इसमें, विभिन्न कहानियों के पात्रों को दर्शाने के लिए महान महागुरू के उपहार कस्तूरी का प्रयोग किया गया है।), **देनधामझापाली नृत्य, कुशान नृत्य** (असम की संस्कृति मुख्यतः लोकगीत और लोककथाओं पर आधारित है। **ज़िकर गीत, पति रभा ढोल प्रदर्शन, बर्धुचिक्ला नृत्य, देमासा (हमशु नृत्य), बोमिताडा, बो नृत्य, बरुत नृत्य, ज़ेनी नागा, दियोरीबिहू, रोंगमेइ नृत्य, फकती नृत्य, दिओमाही, बाँस नृत्य, भारी, लेवोताना नृत्य, काल्पिक पूर्णिमा पाडी, लोटा सामा, बिहू नृत्य** (बिहू शब्द मात्र से रोमांस का समाँ बँध जाता है। बहाग यानी अप्रैल माह का पूरा परिवेश आकर्षक है, जिसमें फूल खिलते हैं, पेड़ों पर नई कोंपलेफूटती हैं, बसंत की पहली फुहार, कोयल की कूक वाले गीत और अपने चहेते के साथ रहने की लालसा झलकती है।)

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 77

****

कडका

निर्देशक :

अवधि : 28 मिनट 18 सेकंड

इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

कडका मूलतः युद्ध गीत थे जिसमें योद्धाओं के साहस का वर्णन होता था। सदियों बाद, विशेष रूप से अजमेर में ग़रीब नवाज़ या ख़्वाजा मोहिउद्दीनचिश्तीके दरगाह पर, सूफ़ी विचारधारा के अंतर्गत वह प्रार्थना गीत बन गया। इसकी संकल्पना युद्ध में बुरे शरीर पर विजयी होना और आत्मा की मुक्ति के इर्द-गिर्द घूमती है। इस प्रकार कडका युद्ध का पारंपरिक गीत है और इसे क़व्वालों ने आध्यात्मिक रूप से परिवर्तित कर दिया है, जिसे वे हर शाम गाते हैं और परिवेश में आध्यात्मिक दृष्टिकोण भर देते हैं। यह वृत्त चित्र सूफ़ी गायन शैली पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसे नियमित रूप से अजमेर के ग़रीब नवाज़ दरगाह पर गाया जाता है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.

परिग्रहण सं. 78

****

ईश्वर के चेहरे - मुखनाच

निर्देशक : रविकांत द्विवेदी
अवधि : 59 मिनट 44 सेकंड
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

मानव ईश्वर के कई चेहरे निर्मित करता है। लेकिन यह मुखौटा प्रदर्शनकारी और ग़ैर प्रदर्शनकारी प्रयोजनों से उपयोग में लाया जाता है।

पश्चिम बंगाल का दक्षिणी बिलासपुरजिले में अधिकांशतः जनजातीय लोग बसे हैं। इनमें प्रमुख है राजवंशी। इस जनजाति की अद्वितीय सांस्कृतिक विशेषता मुख नाच है, जिसे वार्षिक सांस्कृतिक समारोह के दौरान आयोजित किया जाता है।

राजवंशी शब्द का तात्पर्य है सभ्य और शाही परिवार। राजवंशियों के अनुष्ठान और संस्कृति कृषि से जुड़ी है। हलवा और हलवानी, समृद्धि और ख़ुशियों का जश्न मनाने वाला हल नृत्य है जिसमें एक किसान और उसकी पत्नी के बीच परस्पर संवाद को दर्शाया जाता है। राजवंशियों के प्रमुख उत्सव हैं "काली पूजा" और "गाजों"। गाजों संघ (गाँवों की एकता) का प्रतीक है। गाजों पर्व का प्रमुख पहलू मुख नाच (9 दिनों का उत्सव) या मुखौटा नृत्य है। मुखौटों के साथ देवताओं के रूप में व्यवहार किया जाता है।

"सूत्रधार" कहलाने वाले पारंपरिक बढ़ई द्वारा लकड़ी के मुखौटे तैयार किए जाते हैं। प्रत्येक मुखौटा एक लट्ठ से बनाई जाती है और उन्हें प्राकृतिक रंगों से रंगा जाता है। प्रत्येक देवता का अपना अलग रंग और सुधारक होता है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 79

****

मुडियेट्टू और दूसरा है कलामेलुतुम पट्टम

अवधि : प्रकरण (एपिसोड) प्रथम : 34:42
प्रकरण (एपिसोड) द्वितीय : 26:24

इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

केरल अपने हरे-भरे भू-दृश्यों, पहाड़ों, गहरी घाटियों, तालाबों और नदियों तथा नारियल के पेड़ों के लिए विख्यात है, जो स्वर्ग को धरती से जोड़ता है। इसके अतिरिक्त, केरल शास्त्रीय, लोक, पारंपरिक और कर्मकांडी कला स्वरूपों के लिए भी जाना जाता है। कला का एक प्राचीन स्वरूप है मुडियेट्टू और दूसरा है कलामेलुतुम। मुडियेट्टू और कलामेलुतुम प्रदर्शनों से ठीक पहले सब्ज़ियों के चूरे से देवताओं का चित्र चित्रित किया जाता है। ये चित्र या पेंटिंग 'संहारम' नाम से जाने जाते हैं। पुरोहित द्वारा भगवान गणेश की पूजा की जाती है। गणेश, सरस्वती, कृष्ण, शिव की स्तुति में एक तारयुक्त वाद्य यंत्र नादगंडी की संगत में गीत गाए जाते हैं। फ़िल्म में केरल की लोक-कला परंपरा पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसका अपना पुराण, नृत्य और संगीत है।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 80

****

तुलुनाडू के लोक खेल

निर्देशक : दिनेश शिनॉय
अवधि :
इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रस्तुत

जैसा कि नाम सूचित करता है, तुलुनाडु (कर्नाटक) तुलु भाषा बोलने वाले लोगों की भूमि है। इस भाषा की कोई उपयुक्त लिपि नहीं है लेकिन संप्रेषण के माध्यम के रूप में यह प्रचलन में है।

तुलुनाडु का लोक खेल सीधे सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक कारकों से जुड़ा है। इन खेलों का विकास इसकी भूमि, जल और पहाड़ से प्रभावित है। हुलुदंड और कगेरगिरि जैसे खेल जंतुओं के प्रति प्रेम और उनकी देख-रेख को व्यक्त करते हैं।

कृषि उन्मुख तुलुलोग, जंतु उत्पादन के लिए हुलिनाडु या बाघ या गाय के खेलों के प्रतीक हैं। इसके अतिरिक्त, ये खेल जानवरों के प्रति उनके प्रेम और स्नेह को अभिव्यक्त करता है। ये सभी खेल सांस्कृतिक प्राचलों से ओत-प्रोत हैं।

कॉपीराइट इ.गाँ.रा.क.के.
परिग्रहण सं. 81

****